बुध-विचार

●

लेखक :
ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे.

अनुवादक :
विद्याधर जोहरापुरकर एम्. ए.
नागपुर २.

प्रथमावृत्ति १९५९

मूल्य दो रुपया

दैव विचार माला. क्र. -४

बुध-विचार

●

लेखक :
ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे.

अनुवादक :
विद्याधर जोहरापुरकर एम्. ए.
नागपुर २.

प्रथमावृत्ति १९५९

मूल्य दो रुपया

दै व वि चा र मा ला ... -४

विषयानुक्रम

प्र का श क :
अशोक दिगंबर धुमाळ
नागपूर प्रकाशन
सीताबर्डी, मेन रोड,
नागपूर १.

मु द्र क :
ल. म. पटले
रामेश्वर प्रिंटिग प्रेस,
सीताबर्डी
नागपूर १.

बुध-विचार

प्रकरण १

बुध की चार अवस्थाएं।

किसी चित्र में मनुष्य के जीवन की दस अवस्थाएं बतलाई हैं। १ जन्म। २ पहले दस वर्षों में बचपन, खेलकूद की अवस्था। ३ तदनंतर २० वें वर्ष तक विद्याभ्यास की अवस्था-इसमें मनुष्य के स्वभाव का निर्माण होता है, आनंदी, बेफिक्र, आग्रही और हठी स्वभाव होता है, खा-पीकर चैन करने की प्रवृत्ति होती है, दूसरों के साथ मित्रता या झगडे करने की इच्छा होती है। ४ इसके बाद ३० वें वर्ष तक उद्योग की प्रारंभावस्था-इसमें व्याह होकर एकाध संतान भी होती है, व्यवसाय में स्वार्थी तथा अहंकारी प्रवृत्ति होती है, आगे बढने की महत्त्वाकांक्षा होती है, सार्वजनिक क्षेत्र में नेता बनने की इच्छा होती है। ५ तदनंतर ४० वें वर्ष तक दो चार लडके लडकियां होती हैं, व्यवसाय करके कुछ थक जाते हैं, नाना प्रयत्नों में कभी यश तो कभी अपयश मिलता है, कोर्ट कचहरियों के बहुतसे व्यवहार करने पडते हैं, किन्तु आयुष्य के बारे में समाधान नही होता, इतना सब प्रयास व्यर्थ हुआ ऐसी भावना होती है। इस प्रकार मृत्यु तक और पांच अवस्थाएं बतलाई हैं।

शास्त्रीय दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य के जीवन की सात अवस्थाएं हैं-जन्म, बाल्य, कुमार, तारुण्य, प्रौढ, वृद्ध व मृत्यु। इनमें

कुमार, तारुण्य, प्रौढ तथा वृद्धावस्था का विशेष विचार करना चाहिए। कुमार अवस्था में मनुष्य का स्वभाव बनता है। इस अवस्था में बुरी आदतों से और कुसंगति से बच्चे को दूर रखना चाहिए। उसका विद्याभ्यास ठीक तरह चलते रहना चाहिए। अच्छी आदतें डालना चाहिए। इस प्रकार शीलसंपन्न होने पर वह तरुण अवस्था में प्रवेश करता है। इस समय शारीरिक वासनाएं जागृत होती हैं। अतः योग्य समय में अनुरूप वधू के साथ उसका व्याह कर देना चाहिए। इस तरह वासनाओं पर नियंत्रण न रखा तो प्रायः तरुण अवस्था में कुमार्ग की ओर प्रवृत्ति होती है और परस्त्रियों में वह आसक्त होता है। इसी अवस्था में व्यवसाय का आरंभ कर धनार्जन भी करना पडता है। प्रौढ अवस्था में बच्चों का पालनपोषण करने का भार होता है, व्यवसाय में नाना प्रकार के मौके आते हैं जिनमें कभी यश, अपयश मिलता है। वृद्धावस्था में बच्चे सयाने होकर अपना काम देखने लगते हैं। यह निवृत्ति का वय है यद्यपि बहुतसे लोग इसमें भी बहुत विषयासक्त होते हैं।

ग्रहमाला में चौथे स्थान पर बुध ग्रह है। इसकी भी चार अवस्थाएं होती हैं। मिथुन, तुला तथा कुंभ में कुमार अवस्था, मेष, सिंह तथा धनु में तरुण अवस्था, वृषभ, कन्या तथा मकर में प्रौढ अवस्था एवं कर्क, वृश्चिक तथा मीन में वृद्ध अवस्था ऐसा इसका विभाजन हमने किया है। बुध कुमार अवस्था में हो तो जीवन भर नया अभ्यास करने की प्रवृत्ति होती है। स्वभाव आग्रही, क्रोधी, कामुक होता है, बहुत बोलनेकी प्रवृत्ति होती है और बुद्धि शान्त होती है। यह तरुण अवस्था में हो तो विषयासक्त प्रवृत्ति होती है, झगडालू, किन्तु विद्वान और बुद्धिमान होता है। अभिमान बहुत होता

है, विरोध सहन करने की इसे बिलकुल इच्छा नही होती। प्रौढ अवस्था में इसकी बुद्धि शान्त और स्थिर होती है। सलाह ठीक तरह देना, बुद्धिका दुरुपयोग न करना यह इसकी विशेषता होती है। वृद्धावस्था में बुद्धि विपरीत होती है, उसका दुरुपयोग करते हैं। खुद कर्तृत्वशून्य होने पर भी दूसरों की निन्दा करते हैं। ये बुध की चार अवस्थाएं हैं।

प्रकरण २

बुध का स्वरूप

इस प्रकरण में बुध के रूपरंग के बारे में कुछ विचार करना है। पहले प्राचीन ग्रंथकारों के मत देकर फिर उसका विवेचन करेंगे।

आचार्य—दूर्वाश्यामो ज्ञः —इसका रंग दूर्वा के समान सांवला है। हरितः —हरा रंग है। वस्त्र--सडा हुआ, स्थान—क्रीडास्थान धातु—त्वचा, ऋतु—शरद्, रुचि—मित्र, अवस्था—कुमार, धातु—सींप ये इनके अन्य वर्णन हैं।

वैद्यनाथ—शिरसा ज्ञः—इसका उदय सिर की ओर से होता है। ज्ञो विहगस्वरूपः — रूप पक्षी जैसा है। बुधालयग्रामचरौ गुरुज्ञौ—गुरु और बुध ये दो ग्रह विद्वानों के घर और गांव के कारक हैं। शाखाधिपो बोधनः --यह शाखाधिप है। देवता–हरि; रत्न–मरकत तथा गरुत्मत्–गरुड मणि; दिशा–उत्तर; प्रदेश–विंध्य पर्वत से गंगा नदी तक (विंध्यान्तमार्यः सुरनिम्नगान्तं बुधः।) जाति-शूद्र (शूद्र-कुलाधिपः शशिसुतः) ज्ञः सरजोगुणः —यह रजोगुणी है। षंढप्रकृतिः पुरुषः शशिजः—यह नपुंसक है।

पराशर—प्रायः वैद्यनाथ के समान मत है। तत्त्वं क्षोणी (पृथ्वी तत्त्व) तारासुतः त्वग्धातुनाथः—यह त्वचा धातु का स्वामी है। दृष्टिः कटाक्षेण इन्दुसूनोः —बुध की दृष्टि तिरछी होती है। बलवान होने का समय – बुधः सदा कालजवीर्यशालिनः — नित्यही बलवान होता है। स्वभाव—चंद्रसुतस्तु मिश्रः —स्वभाव मिश्र है। पराजय—असुरमंत्रिणा बुधः–शुक्र से बुधका पराजय होता है। बलवान होने का समय—कन्यानृयुग्मभवने निजवारवर्गे चापे विना रविमहर्निशमिन्दुसूनुः। सौम्यायने च बलवानपि राशिमध्ये लग्ने सदा यदि यशोबलवृद्धिदः स्यात्॥ कन्या और मिथुन राशि में, बुधवार को, द्रेष्काण तथा नवांश कुण्डली में स्वगृह में, धनु राशि में (रवि के साथ न हो तो), रातको तथा दिन को, विषुव के उत्तर में तथा राशि के मध्यभाग में बुध बलवान होता है। यह लग्न में हो तो यश और बल की वृद्धि करता है। राहुदोषं बुधो हन्यात्। राहुके दोष बुध से दूर होते हैं। शशिजश्चतुर्थे विफलो भवति। बुध चतुर्थ स्थान में निर्बल होता है।

कल्याणवर्मा—बुधो नरकाधिवासानाम्। यह नरक लोक का स्वामी है। शशिजोथर्ववेदराट्—यह अथर्ववेद का स्वामी है। प्रातर्बुधः—यह सुबह के समय बलवान् होता है। अन्य वर्णन वैद्यनाथ के समान है।

जयदेव—बुधो ग्रामचारी–यह गांव में घूमनेवाला होता है। बुधात् जीवचिंता—जीव के विषय में विचार बुध से करे। ब्राह्मणो रोहिणीभवः – यह ब्राह्मण वर्ण का है। शिशुः सौम्यः – इसकी अवस्था बाल है। शूद्राधीशश्चंद्रपुत्रः – यह शूद्रों का स्वामी है। वस्त्र–जलार्द्र—पानी से भीगा हुआ। धातु–युक्तिरूप्यं – कांसा, जस्त।

गुणाकर—वर्ण-नील; धातु-पीतल, कांसा; स्थान-खेलकूद का मैदान।

मन्त्रेश्वर—वर्ण—सांवला; धान्य—हरे रंग के चने; प्रदेश—मगध (दक्षिण बिहार); वय-नखं २० वर्ष; दाहिने भाग पर कुछ निशान बना होता है।

रामदयाल—बुधो वैश्यः—यह वैश्य वर्ण का है।

सर्वार्थचिन्तामणि—विद् वैश्यः। वस्त्रं हरितं श्यामं क्षौमं—हरे या सांवले रेशमी वस्त्र।

पुंजराज—ज्ञः तमश्च, तिर्यग्बुधः। यह तमोगुणी है तथा मध्य-लोक का स्वामी है।

कालिदास—वस्त्र—नया तथा गीला; ऋतु—हेमंत, अंग—नाभि; स्थान—उद्यान तथा खेलकूद के मैदान; काष्ठ, गला।

विलियम लिली—इसका रंग धूसर, चमकता हुआ चांदी के समान है। दक्षिण की ओर अधिकतम शर ३ अंश ३९ मिनिट है तथा उत्तर की ओर ३ अंश ३३ मिनिट है। इसे पुरुष या स्त्री ग्रह कहना ठीक नही क्यों कि अन्य ग्रहों का जैसा सम्बन्ध हो वैसे दोनों गुणधर्म इसमें मिलते हैं। पुरुष ग्रह साथ में हो तो यह भी पुरुष प्रवृत्ति का होता है, स्त्री ग्रह साथ हो तो इसकी भी स्त्री प्रवृत्ति होती है। यह शीतल, रूखा और उदास प्रवृत्ति का ग्रह है। कूट कारस्थान करानेवाला ग्रह है।

बेसी लिओ—पारे पर इसका स्वामित्व है।

उपर्युक्त फलों का विवेचन

रंग—इसे दूर्वा के समान सांवला माना है किन्तु यह ठीक नही क्यों कि इसका रंग आंखों को कुछ पीला नीला दीखता है।

गुणाकरने नीला रंग कहा है। पाश्चात्यों ने स्लेट, पिंक, ग्रे ऐसे मिश्र रंग कहे हैं।

त्वचा— यह धातु बुध के अधिकार में देना ठीक नही क्यों कि त्वचा के रोग जब होते हैं तब कुण्डली में बुध दूषित नही होता। बुध दूषित होने से पागलपन, फिट आना, मस्तिष्क के रोग आदि विकार होते हैं। त्वचा का स्वामी मंगल मेष, सिंह, धनु, मकर और कुंभ में हो तो त्वचा रुक्ष और मोटी होती है। मंगल वृषभ और वृश्चिक में होतो त्वचा मोटी किन्तु नाजुक होती है। मिथुन और तुला के मंगल से त्वचा पतली किन्तु मजबूत होती है। कर्क, कन्या और मीन के मंगल से त्वचा पतली और नाजुक होती है। बुधकी स्थिति अच्छी होते हुए भी मंगल दूषित हो तो त्वचारोग होते हैं। सब्र, नायटा, फोड़ फुन्सी, खुजली, चेचक, कोढ आदि रोग ऐसी स्थिति में होते हैं। अतः त्वचा धातु पर मंगल का और मज्जा धातु पर बुधका अधिकार मानना चाहिए।

स्थान—खेलकूद का मैदान। बुधको कुमार अवस्था का मानकर यह वर्णन किया है। किन्तु आजकल विज्ञान की बहुत प्रगति हुई है। तदनुसार बुद्धिका क्षेत्र भी अब बुध के अधिकार में आ सकता है।

वस्त्र—सडा तथा गीला वस्त्र बुध के अधिकार में है। इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही। कालिदास ने नया वस्त्र कहा वह योग्य प्रतीत होता है।

धातु—सींप अथवा पारा यह इसकी धातु कही है, इसकी भी उपपत्ति स्पष्ट नही। हमारे विचार से सीसा धातु योग्य है क्यों कि यह लिखने के लिए उपयोग में आती है।

ऋतु—शरद् । कुछ ग्रंथकारों ने हेमंत ऋतु कहा वह ठीक नही है । शरद ऋतु में सृष्टि प्रफुल्लित होती है; खेती हरीभरी होती है और बुध का रंग भी हरा माना है ।

रुचि—मिश्र । बुध के स्वामित्व के व्यक्तियों को मुख्यत खट्टे पदार्थ-जैसे दही, छाछ, इमली, आचार आदि बहुत प्रिय होते हैं । पश्चिमीय ज्योतिषियों ने शीतल और कषैली रुचि कही है ।

अवस्था—कुमार । यह आकार से सब ग्रहों में छोटा है । इसे राजपुत्र माना यह योग्य ही है ।

उदय—इसका उदय सिर की ओर से होता है । ग्रहों के उदय का विवेचन रविविचार में किया है ।

स्वरूप—इसे पक्षी माना है । अंग्रेजी में इसे विंग मेसेंजर कह सकते हैं । इस युग में रेडियो, तार आदि द्वारा संदेश भेजने का कार्य होता है वैसा पहले पक्षियों द्वारा संदेश भेजा जाता था । तदनुसार यह कल्पना की है ।

निवासस्थान—विद्वानों के घरों तथा गांवों में इसका निवास माना है । यह ठीक ही है ।

शाखाधिप—इस वर्णन का उपयोग स्पष्ट नही ।

देवता—विष्णु । हमारे विचार से बुध ज्ञान का कारक है अतः ज्ञान की देवता सरस्वती ही इस ग्रह की देवता माननी चाहिए ।

रत्न—मरकत । हमारे विचार से चित्रविचित्र रंग का ओपल नामक रत्न बुध का मानना चाहिए । इसका अनुभव हमने देखा है । एक लडका बुद्धिमान था किन्तु स्कूल में नही जाता था और आवारा जैसा बरताव करता था । इसे गले में ओपल पहनाया तब से इसकी आवारा प्रवृत्ति शांत हुई और वह एक अच्छे विद्यार्थी के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।

दिशा और प्रदेश—उत्तर दिशा देवों की और विद्वानों की दिशा मानी है अतः यही बुध की दिशा है। विंध्य पर्वत से गंगा नदी तक के प्रदेश पर इसका स्वामित्व माना है। मंत्रेश्वर ने मगध प्रदेश कहा वह योग्य नही।

वर्ण—विभिन्न ग्रंथकारों ने इसे शूद्र, वैश्य अथवा ब्राह्मण वर्ण का माना हैं। यह ज्ञान का उपासक है अतः इसे ब्राह्मण मानना ठीक होगा।

गुण—इसे रजोगुणी कहा है। यह अकेला स्वतंत्र हो तो यह वर्णन ठीक प्रतीत होता है। अन्य ग्रहों के साथ हो तो उन ग्रहों के अनुसार गुण प्रकट करता है। पुंजराज ने तमोगुणी माना है।

पौरुष—इसे नपुंसक प्रकृति का माना है। हमारे विचार से यह वर्णन बिलकुल ठीक नही। पुत्रोत्पादन के सामर्थ्य पर बुध का अधिकार नही होगा किन्तु बुद्धि की सन्तान जो ग्रन्थ या संशोधन-कार्य उन पर बुध का ही अधिकार है। शारीरिक दृष्टि से पुत्र ही मनुष्य का उत्तराधिकारी है। किन्तु पुत्र तो उत्पन्न होकर नष्ट भी हो जाता है अथवा पिता की कीर्ति को कलंकित करता है। किन्तु साहित्यरूप सन्तान शाश्वत होती है और निर्माता की कीर्ति बढाती है। महाराष्ट्र के स्वर्गीय आपटे, गोखले, भंडारकर, गोविंद, आगरकर, नाथमाधव, बंगाल के कविश्रेष्ठ रवींद्रनाथ, मैसूर के श्रेष्ठ वैज्ञानिक सर रमन आदि महान पुरुष अपनी बुद्धिमता और साहित्यरचना से ही जगद्विख्यात हुए हैं। इस बुद्धिमत्ता पर जिसका अधिकार है उस बुध को नपुंसक कहना अनुचित है।

तत्त्व—पृथ्वी। बुध को पृथ्वीतत्त्व का अधिकारी माना है किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता। पृथ्वीतत्त्व पर शनि का और वायुतत्त्व पर बुध का स्वामित्व है।

दृष्टि—तिरछी । इसका स्पष्टीकरण नही होता ।

बल—यह सर्वदा वलवान होता है ।

स्वभाव—मिश्र । यह रजोगुणी है ।

पराजय—यह शुक्र के द्वारा पराजित होता है ।

विफलता—इसे चौथे स्थान में विफल माना । यह लग्न से चौथा स्थान है कि चन्द्र से यह स्पष्ट नही ।

लोक—कल्याणवर्मा ने नरकलोक कहा है । कुछ शास्त्रकारों ने पाताल लोक कहा है । किन्तु हमारे विचार से मृत्यु लोक ही बुध का लोक है ।

वेद—अथर्ववेद । इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही ।

बलवान—सुवह के समय यह बलवान होता है । सूर्योदय के पहले दो घंटे यह आंखों से दिखाई देता है । यही इसका वलवान होने का समय है ।

प्रश्न विचार—यह जीवचिन्ताकारक है । कन्या लग्न के समय अथवा लग्न में बुध होते हुए जो व्यक्ति प्रश्न पूछता है वह प्राय: अपने बीमार मित्र की प्रकृति के बारे में प्रश्न होता है ।

धान्य—हरे चने । इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही ।

हमारे शास्त्रकारों ने और पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने बुध का स्वरूप बतलाते समय राशियों का विशेष विचार नही किया है अतः उनमें कुछ परस्पर विरोध दृष्टिगोचर होता है । उदाहरणार्थ-किसी ने शरद तो किसी ने हेमंत ऋतु माना है । बुध मिथुन राशि में हो तो हेमंत और कन्या में हो तो शरद ऋतु योग्य होता है । पाश्चात्यों ने रूखा, शीतल, चंचल, शीघ्रकोपी यह वर्णन दिया यह मिथुन के बुध के लिए ठीक है । कन्या के बुध के लिए डरपोक, उत्तेजक, प्रसवशील,

आर्द्र यह वर्णन ठीक है। कन्या का बुध तमोगुणी है तो मिथुन का सत्त्वगुणी है। इस प्रकार अन्य ग्रहों के स्वरूप में भी राशि का विचार अवश्य करना चाहिए।

प्रकरण ३

कारकत्व विचार

बुध के कारकत्व के बारे में प्राचीन शास्त्रकारों के विचार देखिए—

कल्याणवर्मा—श्रुतलिखितशिल्पचैत्यनैपुण्यमंत्रिदूतहास्यानाम्। खगयुग्मख्यातिवनस्पतिस्वर्णमयप्रभुः सौम्यः॥ सुना हुआ अथवा लिखा हुआ शास्त्र, शिल्प, बौद्ध गुहामंदिर, निपुणता, मंत्रिपद, दूत, हास्य, आकाशसंचारी, कीर्ति, वनस्पति तथा सुवर्ण पर बुध का अधिकार है।

वैद्यनाथ— विद्याबंधुविवेकमातुलसुहृद्वाक्कर्मकृद् बोधनः। विद्याभ्यास, भाईबंद, विवेकशक्ति, मामा, मित्र, वाणी के कार्य इन पर बुध का अधिकार है।

पराशर—ज्योतिर्विद्यागणितकार्यनर्तनवैद्यहासभीकारको बुधः। ज्योतिष, गणित, नृत्य, वैद्यक, हास्य, भीति तथा संपत्ति का कारक बुध है।

सर्वार्थचिन्तामणि— सन्ततिशान्तिविनयभक्तिमतिज्ञातिगोत्र-समृद्धिप्रज्ञावेदान्तकारको बुधः। सन्तति, शान्ति, विनय, बुद्धि, जाति, सम्बन्धियों की समृद्धता, ज्ञान, वेदान्त–आत्मा के बारे में विचार–आदि का कारक बुध है।

विद्यारण्य—प्रज्ञावत् कर्म विज्ञानं बुधेन तु विचिन्तयेत्। जिन में बुद्धिमत्ता की जरूरत है ऐसे महान कार्य तथा विज्ञान का विचार बुध से करना चाहिए।

गुणाकर—मातृबन्धुः—मामा की स्थिति का विचार बुध से होता है।

जीवनाथ—प्रवरकाव्यपटुत्वं विनोदकलादिकं प्रवरबोधमनः-शुचिमादिशेत्। उत्तम कवि, विनोद तथा कलाओं में निपुणता, उत्तम ज्ञान और मन की पवित्रता का विचार बुध से करना चाहिए।

मन्त्रेश्वर—पाण्डित्यं सुवचः कलानिपुणतां विद्वत्स्तुतिं मातुलं वाक्चातुर्यमुपासनादिपटुतां विद्यासु युक्तिं मतिं। यज्ञं वैष्णवकर्म सत्य-वचनं शुक्तिं विहारस्थलं शिल्पं बान्धवयौवराज्यसुहृद्स्तद्भागिनेयं बुधात्॥ पाण्डित्य, अच्छे वचन, कलाओं में निपुणता, विद्वानों द्वारा प्रशंसा होना, मामा, बोलने में चतुरता, उपासना में कुशल होना, ज्ञान, बुद्धि, यज्ञ, विष्णु की भक्ति, सत्य बोलना, सींप, खेलने के स्थान, शिल्प, भाई, युवराजपद, मित्र और भानजा इनका कारक बुध है।

कालिदास—विद्याधीशतुरंगकोष-ज्ञानानि वाक्यद्विजाः पादातं लिपिलेख्य-प्रासादकारा तीर्थयात्रासुवचः प्रासंगदेवालयाः वाणिज्यं वरभूषणं मृदुवचो वेदान्तमातामहाः॥ दुःस्वप्नं च—वैराग्यविचित्रहर्म्य-भिषजः—अभिचाराः—विनयो ज्ञातिर्भयं नर्तनं भक्तिः—शमः नाभिर्गोत्र-समृद्धिमिश्रपदार्थानि आंध्रभाषाधिपः॥ भाषाचमत्कारता—कर्म गोपुर-गुह्यौ—। सत्पौराणिक शब्दशास्त्रसुमहारत्नादिसंशोधकः विद्वान्—मंत्र-यंत्रसुमहातंत्रादिकाः सौम्यतः॥ ज्ञान का स्वामित्व, घोडे, धनसंचय, वाक्य, ब्राह्मण, पैदल चलनेवाले सैनिक, व्यापार, लिपि, लिखना, बडी इमारतें, कारागृह, तीर्थयात्रा, अच्छे वचन, देवालय, उत्तम अलं-

कार, कोमल वचन, वेदान्त, नाना, बुरे स्वप्न, वैराग्य, सुन्दर घर, वैद्य, मन्त्रतन्त्र, विनय, जाति, भय, नृत्य, भक्ति, शान्ति, नाभि, सम्बन्धियों की समृद्धता, मिश्र पदार्थ, आंध्र प्रदेश और तेलुगुभाषा, चमत्कारपूर्ण भाषा, मंदिरों के गोपुर (दक्षिण के मदुरा आदि शहरों में मंदिरों के चारों ओर बडे बडे गोपुर होते हैं।), गुप्त रहस्य, अच्छा प्रवचनकार, शब्दशास्त्र, व्युत्पत्ति, व्याकरण, रत्न, संशोधक, वैज्ञानिक, विद्वान, मंत्रतंत्रज्ञ इन विषयों का विचार बुध से करना चाहिए।

विलियम लिली— साहित्यिक, तत्त्वज्ञ, गणितशास्त्रज्ञ, ज्योतिषी व्यापारी, कार्यवाह, लेखक, शिल्पकार, कवि, वक्ता, वकील, शिक्षक मणियारी सामान के व्यापारी, मुद्रक, अटर्नी, राजदूत, कमिशनर, लिपिक, हिसाब लिखनेवाले, सालिसिटर, कभी कभी चोरी करनेवाले, बहुत बोलना, मंत्री, व्याकरणकर्ता, दर्जी, दूत, चपरासी, मुद्रा विनिमय करनेवाले (एक देश की मुद्रा लेकर दूसरे देश की मुद्रा देनेवाले बैंक), आदि का कारक बुध है।

रोगों का कारकत्व—गुह्योदराद्दश्यसमीरकुष्ठमंदाग्निशूलग्रहणी-रुगाद्यैः। बुधादिविष्णुप्रियदासभूतैरतीव दुःखं शशिजः करोति॥ गुह्य रोग, पेट के रोग, वायु रोग, कोढ, मंदाग्नि (भूख न लगना), शूल, संग्रहणी तथा विष्णु के सेवक भूतों द्वारा पीडा होना इन बाधाओं पर बुध का अधिकार है। इस विषय में **विलियम लिली** का मत— आलसीपन, सिर चकराना, पागलपन, मस्तिष्क हलका होना, मस्तिष्क के अन्य रोग, जीभ के दोष, व्यर्थ अभिमान, अकारण कल्पनाओं में खो जाना, स्मरणशक्ति दूषित होना, आवाज कर्कश होना, श्वास, दमा, कफकी अधिकता, गला रुंध जाना, संधिवात, गूंगापन, बडबडा-

पन, बुरी कल्पनाएं, ज्ञानेन्द्रियों के विकार, बालग्रह, चक्कर आना इन दोषोंका कारक बुध है ।

हमारा मत—परीक्षा (लिखित तथा मौखिक), विद्यार्थी, डाकतार विभाग, रेल्वे, शेयर बाजार, बैंक और बीमा कंपनियों के कर्मचारी, बडी फर्में, वार्ताहर, विज्ञान, रोगविज्ञान, अंकगणित, एविडन्स एक्ट, स्टॅम्प एक्ट, रजिस्ट्रेशन एक्ट, निबन्धलेखन, मातृभाषा की शिक्षा, पौर्वात्य भाषाओं के अनुवादक, अंगूठे के निशानों के विशेषज्ञ, वातावरणशास्त्र, तत्त्वज्ञान, मानसशास्त्र, शब्दजाल, वाद-विवाद मंडल, शालाएं, महाविद्यालय, संशोधनसंस्थाएं, टाइपिस्ट, हस्त-रेखाविशेषज्ञ, अंकज्योतिष, मज्जातन्तुछेदन, मस्तिष्क ज्योतिष, चलन-कलन (Calculus) (गणित की इस शाखा के बारे में प्रख्यात भारतीय ज्योतिर्विद सिद्धान्त शिरोमणिकर्ता भास्कराचार्यने विवरण दिया है । पश्चिम में डा. लेबनीझ इस गणित के प्रारंभिक विद्वान हुए हैं ।), संख्याशास्त्र, कागज के कारखाने आदि का कारक बुध है ।

प्राचीन मतों का विवेचन

कल्याणवर्मा ने वर्णन किया है उसमें बहुतसा निरुपयोगी है । शिल्पशास्त्र का कारक शुक्र मानना चाहिए । सुवर्ण यह धन का प्रतीक है अतः इसका कारक भी बुध नही है । **वैद्यनाथ** का कारकत्व योग्य है । विचार, वाणी, विद्या इनका विचार बुधसे ही होता है । आप्तसंबंधियों का तथा भाईबहिनों का कारक बुध कहा क्यों कि नैसर्गिक कुण्डली में तृतीयस्थान का स्वामी बुध ही है । इसी प्रकार नैसर्गिक कुण्डली में षष्ठ स्थान भी बुध के अधिकार में है । अतः मामा, मौसी और शत्रु ये विषय भी बुध के कारकत्व में शामिल होते

हैं। विद्वान लोगों के वादविवाद (जो आजकल बहुधा वृत्तपत्रों में चलते हैं) अर्थात पण्डितवाक्युद्ध यह कारकत्व भी बुध का है। नैसर्गिक कुण्डली में बुध तृतीय स्थान का स्वामी है अतः वाणी का कारक भी यही है। अकेले पुरुष पर मेष के मंगल का स्वामित्व हैं, अकेली स्त्री पर वृषभ के शुक्र का अधिकार है, किन्तु इन दोनों के संयोग रूप मिथुन पर बुध का अधिकार है। स्त्रीपुरुष संयोग से ही वाणी की प्रवृत्ति होती है। खगोल दृष्टिसे बुध रवि का एक टुकडा है अतः इसे युवराज माना है। कृतकर्म का विचार बुद्धि से होता है अतः यह भी बुध का कारकत्व है।

पराशरने ज्योतिष विद्या यह बुध का कारकत्व कहा किन्तु इसकी अपेक्षा खगोलशास्त्र (Astronomy) अधिक योग्य होगा। स्व. व्यंकटेश शास्त्री केतकर, नवाथेजी, राफेल, वासुदेव शास्त्री खरे आदि अच्छे खगोलशास्त्रज्ञ थे। इनकी कुण्डली में बुध बहुत प्रबल है। अतः केतकर, नवाथे तथा राफेल को इस क्षेत्र में बहुत कीर्ति मिली। जिनका बुध दूषित है वे इस शास्त्र का अभ्यास करें भी तो कीर्ति नही मिलती। बुध पुरुष ग्रह से युक्त हो तो पुरुष सदृश फल देता है तथा स्त्रीग्रह के साथ हो तो स्त्रीसदृश फल देता है। ज्योतिषज्ञान के लिए बुध के साथ नेपच्यून के अच्छे योग होना जरूरी है क्यों कि नेपच्यून अंतर्ज्ञान का कारक ग्रह है। गणित में अंकगणित, त्रिकोणमिति तथा चलनकलन ये विषय बुध के अधिकार में हैं। नृत्यकला पर बुध का अधिकार माना है इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही। पुराने समय में नृत्यशिक्षा के लिए नपुंसकों की योजना होती थी (अर्जुन बृहन्नडा के वेष में एक वर्ष तक राजा विराट की पुत्री उत्तरा को नृत्य पढाते रहे यह कथा प्रसिद्ध ही है) और बुध को नपुंसक

ग्रह माना है इस दृष्टि से शायद यह सम्बन्ध जोडा होगा। वैद्यों पर बुध का स्वामित्व कहा क्यों कि नैसर्गिक कुण्डली में छठवें रोगस्थान पर बुध का अधिकार है। हास्य–यह भी षष्ठ स्थान का विषय है। संपत्ति–इसका विचार तृतीय या षष्ठ स्थान से नही होता। षष्ठ स्थान से सिर्फ पशुसंपत्ति का विचार किया जा सकता है।

सर्वार्थचिन्तामणि – इस में सन्तति का कारक बुध माना है। यह तृतीय स्थान की दृष्टि से ठीक है। किन्तु इसी ग्रन्थकर्ता ने बुध को नपुंसक माना है। नपुंसक ग्रह को सन्तति का कारक मानना योग्य नही होगा। शान्ति, विनय, भक्ति ये विषय भी तृतीय स्थान के ही हैं। तृतीय में बुध हो तो वह पुरुष नम्र और शान्त होता है। जाति और आप्तों की समृद्धता यह विषय भी तृतीयस्थान का ही है।

प्रज्ञा—ईश्वरज्ञान की ओर प्रवृत्त होनेवाली बुद्धि को प्रज्ञा कहते हैं। इस का कारक बुध को मानना योग्य नही होगा। क्यों कि यह संसारदक्ष और व्यावहारिक बुद्धि का कारक है। मिथुन में तृतीय में बुध हो तो वेदान्त की चर्चा करने का शौक होता है।

विद्यारण्य–प्रज्ञावत् कर्म–इस के विषय में ऊपर विवेचन किया है। विज्ञान–इस शब्द का उपयोग पहले ज्ञान तथा उस की प्राप्ति कैसे होती है इस का शास्त्र (Epistemology) इस विषय के लिए होता था। वर्तमान समय में तत्त्वज्ञान की चार शाखाएं मानी जाती हैं– दर्शन (Philosophy), अतींद्रिय वस्तु तत्त्वों का ज्ञान (Metaphysics), तर्कशास्त्र (Logic) तथा मानसशास्त्र (Psychology)। आजकल विज्ञान शब्द का प्रयोग शास्त्रीय (Scientific) ज्ञान के अर्थ में होता है। इस का आधार चिकित्सक बुद्धि है अतः बुध को इसका कारक मानना योग्य है।

गुणाकर—इस के मत का विवेचन वैद्यनाथ के मत के विवेचन में हुआ ही है।

जीवनाथ—काव्यपटुत्व, विनोद तथा कला ये तृतीय स्थान के कारकत्व हैं। मन की भावनाएं सरस रूप से काव्य में व्यक्त होने के लिए शुक्र और नेपच्यून के साथ बुध के शुभ संम्बंध होना जरूरी है। लग्न, पंचम, सप्तम या नवम स्थान में बुध अकेला हो तो विनोदप्रिय स्वभाव होता है। तृतीय में बुध मिथुन में हो तो कलाओं में कुशलता प्राप्त होती है। उत्तम ज्ञान—यह भी तृतीय स्थान का कारकत्व है।

मंत्रेश्वर—अब तक के शास्त्रकारों के विवेचन में इस का सभी वर्णन आ गया है। इस का बहुतसा वर्णन जातक पारिजातमें से लिया है।

कालिदास—ने जो वर्णन किया है उस में विचार करने योग्य कारकत्व ये हैं-मातामह, दुःस्वप्न, वाणिज्य, विचित्र हर्म्य, भिषज, अभिचार, भय, मिश्र पदार्थ, आंध्रभाषाधिप, भाषाचमत्कारता, सत्पौराणिक, संशोधक, यंत्र मंत्र तंत्र। मातामहा–(नानी) इस कारकत्व की उपपत्ति स्पष्ट नही। माता का स्थान चतुर्थ है अतः माता की माता का विचार चतुर्थ से चतुर्थ अर्थात सप्तम स्थान से करना चाहिए। नैसर्गिक कुण्डली में इस स्थान का स्वामी शुक्र है। कुछ शास्त्रकारों ने इस का कारक केतु माना है। दुःस्वप्न-इस की भी उपपत्ति नही मिलती किन्तु छठवें स्थान से इस का सम्बन्ध हो सकता है। वाणिज्य नैसर्गिक कुण्डली में कन्या राशि का अधिपति बुध है अतः व्यापार का कारक उसे मानना योग्य ही है। विचित्र हर्म्य-तरह तरह के घर-इस कारकत्व की उपपत्ति स्पष्ट नही। चतुर्थ में बुध हो तो घरों की प्राप्ति का फल कहा जा सकता है। भिषज-वैद्य-यह तृतीय स्थान का विषय

है। भारतीय वैद्य प्रायः मिथुन, तुला या कुंभ लग्न में जन्म हुए होते हैं। उस में भी मिथुन लग्न का प्रमाण अधिक है। अभिचार–जारण-मारणादि मंत्रोद्वारा दूसरों को तकलीफ देना–यह छठवें स्थान का कारकत्व है। भय–यह भी छठवें स्थान का विषय है। मिश्रपदार्थ, भाशचमत्कारता, सत्पौराणिक, शव्दशास्त्र, संशोधक ये विषय तृतीय स्थान के हैं।

विलियम लिली—ने जो कारकत्व कहा है उस में अधिकतर तृतीयस्थान के विषय हैं। सिर्फ व्यापारी, चोर, दूत, नौकर ये विषय षष्ठ स्थान के हैं। अन्न और वस्त्र का कारक बुध को मानना ठीक नही होगा क्यों कि तृतीय और षष्ठ दोनों स्थानों से इसका संम्बन्ध नही है। भारतीय शास्त्रकारों ने रोगों के विषय में बुध का जो कारकत्व कहा उस का अनुभव नही आता। इस विषय में विलियम लिली का ही मत योग्य है।

कारकत्व का वर्गीकरण

जन्मकुण्डली में उपयोगी कारकत्व—श्रुत, लिखित, नैपुण्य, मंत्रित्व, दूत, हास्य, ख्याति, विद्या, बन्धु, विवेक, मातुल, सुहृत् कृतकर्म, नर्तन, वैद्य, हास, श्री, सन्तति, शान्ति, विनय, भक्ति, प्रज्ञा, वेदान्त, प्रज्ञावत् कर्म, विज्ञान, प्रवरकाव्यपटुत्व, विनोद कला, प्रवरबोध, मनःशुचित्व, धृति, पाण्डित्य, सुवच, विद्वत्ता, स्तुति, वाक्चातुर्य, सत्य, वचन, भागिनेय, कोश, ज्ञान, लिपि, लेख्य, तीर्थयात्रा, वाणिज्य, वरभूषण, मृदुवच, मातामह, दुःस्वप्न, वैराग्य, विचित्रहर्म्य, भिषज, अभिचार, विनय, भय, भाषाचमत्कारता, सत्पौराणिक, शव्दशास्त्र, रत्न, संशोधक, विद्वान, मंत्रयंत्रतंत्र, तत्वज्ञान, गणित, अंकज्योतिष, ज्योतिष, व्यापारी, मुख्य नौकर, लेखक, मूर्तिकार, कवि, व्याख्याता, वकील,

शिक्षक, व्यापारी, मुद्रक, अटर्नी, कमिशनर, मुद्राविनिमय, लिपिक, हिसाब लिखनेवाले, सालिसिटर, सेक्रेटरी, व्याकरणतज्ज्ञ, चोर, दर्जी, हमाल, दूत, पैदल चलनेवाले, साहूकार, बुद्धिमत्ता, परिचित लोक, मित्र, पडोसी, दुभाषिये, नौकरचाकर, जमीनपर का प्रवास, भाईबंद, शिक्षा में सफलता, पुस्तकविक्रेता, बंधुसौख्य, रजिस्ट्रार, दलाल, लोकसंग्रह, मस्तिष्क, ज्ञानतन्तु, फेफडे, अंत्र, मज्जा, हाथ, जीभ, गुह्यरोग, पेट, वातरोग, कोढ, भूख कम होना, शूलरोग, संग्रहणी, डाकतार विभाग, बैंक, बीमा कंपनी, रेल्वे, मिल, तथा बडी बडी फर्मों में क्लर्क, अनुवादक ।

शिक्षा में उपयोगी कारकत्व—गणित, नृत्य, वैद्यक, तत्त्वज्ञान, शिक्षक, ज्योतिष, सालिसिटर, व्याकरण, मौखिक तथा लिखित परीक्षा, शासन की विभागीय (Departmental) परीक्षाएं, पदार्थविज्ञान, अंकगणित, एविडन्स एक्ट, स्टॅम्प एक्ट, वायुमापनशास्त्र, मानसशास्त्र, शब्दशास्त्र, टाइपिंग, अंगूठे के निशानों का अभ्यास, हस्तरेखाशास्त्र, इंजीनियरिंग में उपयुक्त गणित, त्रिकोणमिति, चलनकलन (Calculus) ।

मेदिनीय ज्योतिष में उपयोगी कारकत्व—राजदूत, संधि, डाकतार के सेन्सार बोर्ड, मंत्री, धनसंचय, गुप्त पत्र ।

व्यवसाय के लिए तथा प्रश्न कुण्डली में उपयोगी कारकत्व शिक्षा में सफलता, लेखक, तत्त्वज्ञानी, शिक्षक, ज्योतिष में सफलता, हस्तरेखातज्ज्ञ का व्यवसाय, वैद्य, व्यापारी, वकील, मणियारी दूकानदार, मुद्रक, प्रकाशक, मुद्राविनिमय, क्लर्क, शिल्पकार, मूर्तिकार, सालिसिटर, दर्जी, नृत्य, बुरे स्वप्न, हमाल, रजिस्ट्रार, वादविवादमंडल, शालाएं, महाविद्यालय ।

निरुपयोगी कारकत्व—चैत्य, पक्षी युग्म, वनस्पति, ज्ञाति, गोत्रसमृद्धि, सींप, तरंग, पैदल सेना, देवालय, नाभि, मिश्रपदार्थ।

बुध की शुभाशुभ राशियां—मेष, सिंह, धनु-शुभ। वृषभ, कन्या, मकर-साधारण। मिथुन, तुला, कुम्भ-उत्तम। कर्क, वृश्चिक, मीन-अशुभ।

प्रकरण ४

बुध के स्वरूप का विशेष विचार।

आचार्य—श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च। मधुर वाणी, हंसोड प्रवृत्ति तथा वात पित्त कफ की मिश्र प्रकृति यह इस ग्रह का स्वरूप है।

कल्याणवर्मा—रक्तान्तायतलोचनो मधुरवाक् दूर्वादलश्यामलः त्वक्सारोतिरजोधिकः स्फुटवचाः स्फीतस्त्रिदोषात्मकः। हृष्टो मध्यमरूपवान् सुनिपुणो वृत्तः शिराभिस्ततः सर्वस्यानुकरोति वेषवचनैः पालाशवासा बुधः॥ आंखें विस्तीर्ण और आरक्त, वाणी मधुर, रंग दूर्वा के समान सांवला, सुदृढ त्वचा, रजोगुणी प्रवृत्ति, स्पष्ट बोलना वातपित्तकफ की मिश्र प्रकृति, हृष्ट पुष्ट शरीर, रूपवान, कलाकुशल, दूसरों के बोलने की और पोषाक की नकल करने का स्वभाव तथा शरीर पर शिराएं स्पष्ट दीखना यह बुध ग्रह का स्वरूप है। गुणाकर ने भी लगभग यही वर्णन किया है।

वैद्यनाथ—दूर्वादलद्युतितनुः स्फुटवाक् कृशांगः स्वामी रजोगुणवतामतिहासलोलः। हानिप्रियो विपुलपित्तकफानिलात्मा सद्यः प्रतापविभवः शशिजश्च विद्वान्॥ दूर्वा के समान सांवला वर्ण, स्पष्ट वाणी,

कश शरीर, रजोगुणी मनुष्यों में प्रमुख, हास्यप्रिय, दूसरों का नुकसान करने में आनंद माननेवाला, वातपित्तकफ की मिश्र प्रकृति, प्रतापी तथा पराक्रमी, विद्वान ऐसा इस का स्वरूप है।

जयदेव—पूर्व के ग्रंथकारों से विशेष इतना कहा है—दृष्टस्त्वक्सारनाड्यां स्थूलोर्ध्वजः स्थूलनखौष्ठदन्तः। त्वचा सुदृढ, केश मोटे तथा नख और दांत बडे होते हैं।

पराशर—वपुःश्रेष्ठः क्लिष्टवाक्यो ह्यतिहास्यप्रियः। शरीर हृष्ट पुष्ट होता है, दुर्बोध शब्दों का प्रयोग करता है, हंसना बहुत प्रिय होता।

सर्वार्थचिन्तामणि—पहले के ग्रंथकारों से अधिक एकही लक्षण कहा है—ननु पुंश्चलश्च। यह व्यभिचारी होता है।

मन्त्रेश्वर—इसने एकही विशेषण अधिक दिया है। समांग—शरीर के अवयव सम प्रमाण में होते हैं।

महादेव—इसका मत अब तक के मतों में आ गया है।

विलियम लिली—आमतौर पर कद ऊंचा, शरीर कृश' मस्तक विशाल, लंबा चेहरा, लंबी नाक, सुन्दर आंखें जो न तो पूरी तरह काली होती हैं न भूरीं, छोटे ओंठ, मस्तक पर केश बहुत किन्तु चेहरे पर कम, वर्ण कुछ पीला सा किन्तु अधितकर काला, हाथ तथा उंगलियां लंबी, रंग आलिव या चेस्टनट के समान—इस प्रकार बुध ग्रह का स्वरूप होता है। यह कुण्डली में पूर्व की ओर हो तो-रंग शहद के समान, कद बहुत ऊंचा नही किन्तु प्रमाणबद्ध, आंखें छोटीं, केश कम, ऊंचाई के अनुरूप हृष्टपुष्ट शरीर किन्तु रंग कुछ विशोभनीय-कालासा पीला-और वाणी स्वार्थपर होती है। यह कुण्डली में पश्चिम की ओर हो तो पीला सा चेहरा, दुबला पतला शरीर, अवयव

छोटे और कोमल, चमकती हुई लाल किन्तु सूनी सी आंखें और शरीर आमतौर पर कुछ रूखा—यह इसका स्वरूप होता है। यदि यह कुण्डली में **शुभयोग में हो तो**—बुद्धि कुशाग्र होती है, राजनीतिकुशल होता है, वादविवाद और तर्कशास्त्र में निपुण होता है। इसकी वहस विद्वत्तापूर्ण और प्रमाणयुक्त होती है, वक्तृत्व अच्छा होता हैं। गुप्त रहस्य, अद्‌भुत घटनाएं तथा विविध ज्ञान की खोज में मग्न रहता है। शिक्षक के विना ही बहुतसी बातें सीख लेता है, सर्वशास्त्रज्ञ होने की आकांक्षा होती है। देशविदेश में घूमने की चाह होती है। अपनी प्रतिभा से अद्‌भुत बातें कर दिखाता है, दिव्य तथा अलौकिक ज्ञान की खोज में सर्वस्व लगा देता है। यदि यह व्यापारी हो तो इससे अधिक कुशलता दूसरा कोई नही वतला सकता, संपत्ति प्राप्त करने के अद्‌भुत तरीके खोज निकालता है। यह कुण्डली में **अशुभ योग में हो तो**-कष्टदायक बुद्धि होती है। यह अपनी वाणी और लेखन का उपयोग हर किसी व्यक्ति के विरोध में करता है, स्वभाव विक्षिप्त होता है। अपनी सम्पत्ति और समय व्यर्थ गंवाता है। वहुत झूठ बोलता है और अपनीही व्यर्थ प्रशंसा करते रहता है। वहुत बोलता है, जारणमारणादि दुष्ट विद्याओं का शौक होता है। मूर्ख होता है, किसी पर भी विश्वास रखता है। इसके विचार अस्थिर होते हैं। एक जगह अधिक समय तक नही रहता। हर जगह लोगों को ठगाता है और चोरी करता है। सचमुच ठोस ज्ञान कुछ नही होता किन्तु वहाने वहुत बनाता है। झूठी अफवाहें फैलाता है। वहुत जलदी डरता है। यह साधुसंन्यासी हो तो केवल बोलने में चतुर, दुराचरणी, विवेकहीन और वहुत अस्थिर होता है। यह कुमार्ग की ओर जलदी आकृष्ट होता है।

मेरे विचार—बुध के स्वामित्व के व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार में कद ऊंचा, चेहरा लम्बासा, मस्तक विशाल होता है। अवयव मध्यम, हाथ लम्बे और प्रमाणबद्ध, पेट पतला, कमर मोटी, रंग साधारण गोरा अथवा लाल गोरा होता है। आंखें बडीं किन्तु उग्र होती हैं, क्रूर और भेदक मालूम पडती हैं। आंखों में लाल रंगकी शिराएं अधिक होती हैं। भंग खाने पर जैसी स्थिति होती है वैसी लाल और मादक दृष्टि होती है। दांत सुंदर होते हैं। बहुत जोर से नही हंसता। कम बोलता है किन्तु हावभाव बहुत करता है। अपना फायदा होता हो तो ही बोलते हैं। वाणी मधुर नही होती। केश नाजुक और चमकीले होते हैं। आम तौर पर ये लोग मोहक होते हैं। पैसे के बारे में इन पर विश्वास रखा जा सकता है। अपना हृद्‌गत किसी को नही बतलाते। मित्र कम होते हैं। कुछ धूर्त होते हैं किन्तु अच्छे कार्य में हमेशा मदद करते हैं। कुछ क्रोधी, झगडालू किन्तु विद्वान होते हैं। अभिमानी, किसी का अधिकार न माननेवाले होते हैं। कामुकता अधिक होती है। खाना थोडा किन्तु अच्छा और दिन में कई बार चाहिये। स्त्रीसौन्दर्य के ज्ञाता, शृंगार कुशल होते हैं। त्रिविध रुचि के खाद्य पदार्थों की बहुत चाह होती है पूर्वार्जित सम्पत्ति मूर्खता से या व्यसनों में गंवा देते हैं। तब तक कुछ उद्योग नही करते। रात में बहुत घूमते हैं। कई धंदे करते हैं। जीवन में स्थिरता कम होती है किन्तु सम्पत्ति की चाह बहुत होती है। धन हो तो ही समाधान रहते हैं। ज्योतिषी तथा डॉक्टरों से मित्रता होती है।

दूसरे प्रकार के लोग—इन की ऊंचाई कम, चेहरा गोल और कन्धे बडे होते हैं। तोंद निकलती है। दांत बडे और ठोडी छोटी होती है। आंखें बडीं और कालीं होती हैं। बाईं आंख कुछ छोटी

होती है। मस्तक पर केश होते हैं। हाथ छोटे और उंगलियां मोटीं होती हैं। पैर मोटे, नाक कुछ चपटा, और मुंह बडा होता है। चेहरा सदा हंसमुख होता है। जोर जोर से हंसते हैं। पैसे के व्यवहार के लिए ये लोग लायक नही होते। ये किसी पर विश्वास नही रखते। दूसरों के साथ बोलते हुए अपनी ही बात करते रहते हैं, दूसरों का कहना ठीक तरह नही सुनते। विनोदप्रिय, आनंदी और उत्साही होते हैं। ये धूर्त होते हैं, किसी के द्वारा ठगाये नही जाते। वाहन और नौकरों का सुख अच्छा मिलता है। धनी, बुद्धिमान, शान्त, सौम्य और क्रोधित न होनेवाला होता है। आचार विचार नियमित होते हैं। कुटुम्ब की चिन्ता नही करते। नई कल्पनाओं का उपयोग करके उद्योग-व्यवसाय में प्रगति करते हैं। मन में सदा व्यवसाय की चिन्ता होती है किन्तु चेहरे पर फिक्र के चिन्ह नही दीखते। कई उद्योग करते हैं। उद्योग बडे पैमाने पर करने की प्रवृत्ति होती है, छोटे धंधों में मन नही लगता। खाते बहुत हैं किन्तु अन्न कैसा होना चाहिए इसकी विशेष चिन्ता नही करते। इनकी नींद जल्दी खुलती है, नींद पर संयम होता है। बोलने में पुरानी कहावतें, संस्कृत वाक्य आदि का उपयोग बहुत करते हैं। कुछ व्यभिचारी हो सकते हैं। स्त्रियों के बारे में विधिनिषेध नही मानते। धर्म के बारे में आस्था रखते हैं।

शास्त्रकारों के जो वचन ऊपर दिये हैं उन में श्लिष्ट, सततहास्य, पित्तमारुतकफप्रकृति, दूर्वादलश्यामल, स्फुटवाक्य, हासलोल, हानिप्रिय, सर्ववेशवचनानुकरण, त्वक्सार, स्थूलोर्ध्वज, स्थूलनखोष्ठदन्त, अतिहास्य ये वर्णन दूसरे विभाग के लोगों के लिए ठीक हैं। पहले विभाग के लिए रक्तान्तायतलोचन, त्वक्सार, हृष्ट, मध्यमरूपवान्,

सुनिपुण, शिरावृत्त, कृशांग, सत्वप्रतापविभव, विद्वान्, वपु:श्रेष्ठ, समांग ये विशेषण योग्य हैं। पुंश्चल यह वर्णन दोनों विभागों के लिए ठीक है।

बुध का प्राचीन और अर्वाचीन स्वरूप–बुध विद्यार्थियों का प्रतिनिधि ग्रह है। अत: भारतीय विद्यार्थी के स्वरूप में युगों युगों में कैसा परिवर्तन हुआ यह संक्षेप में देखिए। रामायण-महाभारत के युग में (सन पूर्व २०००–१४००) विद्यार्थी मृगचर्म पहनते थे। एक वस्त्र, लंगोट और यज्ञोपवीत यह उनकी वेषभूषा थी। बड़े होने पर जटाएं रखते थे। बडी सुबह उठकर व्यायाम तथा स्नान से निवृत्त हो सूर्य-पूजन करना, होम हवन के बाद अभ्यास करके गुरुपत्नी की आज्ञा-नुसार काम करना, संध्या तीन बार करना, भोजन के बाद कुछ विश्रांति और शाम को पुन: सुबह के अनुसार सब कार्य करना यह उनकी दिनचर्या थी। राजपुत्रादि विशिष्ट विद्यार्थियों के लिए अलग गुरुकुल बनवा कर उन्हें शस्त्रास्त्रों की और राजनीति की शिक्षा दी जाती थी। भगवान बुद्ध के समय में (सनपूर्व ९००) भारत में तीन बडे विश्वविद्यालय थे–काशी, पंजाब में तक्षशिला और बिहार में नालंदा। विद्यार्थी आठ-दस साल का होते ही उसे इस विश्वविद्यालय में भेजते थे। उस समय उपनयन संस्कार करके उसे गायत्री मंत्र का उपदेश देते थे। मुंडन कराकर यज्ञोपवीत पहनाते थे तथा सदाचार का उपदेश देते थे। तदनंतर भिक्षावृत्ति से निर्वाह करता हुआ वह विद्यार्थी अपने विश्वविद्यालय में पहुंचता था। वहां बारह, चौवीस या छत्तीस वर्ष तक विद्याभ्यास होता था। वेद, वेदांग, दर्शन, काव्य, व्याकरण आदि विषय पढाए जाते थे। अभ्यास पूरा होनेपर न्यायरत्न, व्याकरण कौस्तुभ, काव्यतीर्थ आदि पदवियां मिलती थीं। विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक था। (इसीसे हमारे ग्रंथकारोंने बुध को

नपुंसक माना होगा) । उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी राज्य के कारण भारतीय विद्यार्थी के स्वरूप में आमूलाग्र परिवर्तन हुआ । गांव गांव में स्कूल और शहरों में कालेज स्थापित हुए अतः काशी को जाने की जरूरत नही रही । उपनयन के वाद गांव के ही स्कूल में विद्यार्थी भरती होने लगा । इस की वेषभूषा में भी परिवर्तन हुआ । अव केश बढाकर तेल और पोमेड से सुशोभित करने की पद्धति शुरू हुई । मूंछे रखना वंद हुआ । स्नो पाउडर का उपयोग शुरू हुआ । पोशाक में शर्ट, कोट, जाकिट, पैंट, बूट, कालर आदि का समावेश होने लगा । आंखें कमजोर होने से कई विद्यार्थी चष्मा लगाने लगे । दीक्षान्त समारोह के समय काले गाउन और सिरहर हूड पहनने की पद्धति शुरू हुई । इस तरह हमारे विद्यार्थी वर्ग के रहन सहन में वहुत ही परिवर्तन हुआ ।

प्रकरण ५

द्वादश भाव विवेचन

पहला स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—विद्वान् ।

कल्याणवर्मा—अनुपहतदेहबुद्धिर्वेषकलाज्ञानकाव्यगणितज्ञः । अतिमधुरचतुरवाक्यो दीर्घायुः स्याद् बुधे लग्ने ॥ नीरोग, बुद्धिमान, कलाओं में कुशल, काव्य तथा गणित का ज्ञाता अच्छी वेषभूषा वाला, चतुर और मीठा बोलनेवाला और दीर्घायु होता है ।

वैद्यनाथ—विद्यावित्ततपस्वधर्मनिरतो लग्नस्थिते वोधने ॥ विद्या प्राप्त करनेवाला, धनवान, तपस्वी और अपने धर्म के अनुसार बरताव करनेवाला होता है ।

गर्ग—सुमूर्तिर्निपुणः शान्तो मेधावी च प्रियंवदः। विद्वान् दयालुरत्यर्थं विना क्रूरं बुधे तनौ॥ सुन्दर, निपुण, शान्त, बुद्धिमान, मीठा बोलनेवाला, विद्वान और बहुत दयालु होता है। बुध के साथ लग्न में कोई क्रूरग्रह न हों तो ये फल मिलते है।

दैवज्ञविलास–तनौ बुधे विलोकिते भिन्नवर्णशरीरकं। स्त्रीसुखं मध्यभागे च वातपीडा तनौ भवेत्॥ विस्फोटादिभवं दुःख मशकोऽथ तिलोऽथवा। गुल्मोदर विकारो वा स्वल्पाहारोऽपि जायते॥ शरीर पर अनेक रंग होते है। मध्य वय में स्त्रीसुख मिलता है। वात तथा विस्फोट (फोडे फुन्सी) रोगों से दुःख होता है। शरीरपर तिल अथवा मस होते हैं। गुल्म तथा पेट के रोग होते हैं। भूख कम होती है।

बृहद्यवनजातक—शान्तो विनीतः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः। विद्वान् कलावान् विपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौ जनने तनुस्थे॥ शान्त, उदार, नम्र, सदाचारी, धैर्यशाली, विद्वान, कलाओं में कुशल, और बहुत पुत्रों से युक्त होता है। दशं कीर्तिं बुधो यच्छति। दसवें वर्ष कीर्ति प्राप्त होती है।

जयदेव—उपर्युक्त फलों से दो अधिक कहे हैं दारा अर्थात स्त्री का सुख प्राप्त होता है तथा दान करता है।

काशीनाथ—लग्ने बुधे च गीतज्ञो निष्पापो भूपपूजितः। रूपज्ञानयशोयुक्तः प्रगल्भो मानवो भवेत्॥ संगीत में निपुण, निष्पाप, राजमान्य, रूपवान, ज्ञानी, कीर्तिमान तथा प्रगल्भ बुद्धि का होता है।

वसिष्ठ—हन्ति दोषशतं बुधः। यह सैकडों दोषों का नाश करता है। षष्ठोऽष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः। चतुर्थवर्षे

मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ॥ लग्न में, षष्ठ में या अष्टम में बुध हो तो चौथे वर्ष मृत्यु होती है।

जागेश्वर--भवेद् वंशछेत्ता-भवेच्छिल्पकारः। बुधेज्यौ विलग्ने स्थितौ वाधिपौ चेत् बलिष्ठं वदेद् वर्तुलं वेदकोणम् ॥ वंश नष्ट होता है, शिल्पकार होता है, शरीर बलवान तथा वर्तुलाकृति या चौकोर होता है।

आर्यग्रन्थकार—तनुगतशशिपुत्रे कान्तिमांश्चातिहृष्टो विमल-मतिविशालः पण्डितस्त्यागशीलः। मितमृदुशुचिभाषी सत्यवादी विशाली बहुतरसुखभागी सर्वकालप्रवासी ॥ तेजस्वी, सुंदर, शुद्ध बुद्धि का, विद्वान, त्यागी, थोडा किन्तु मधुर और पवित्र बोलनेवाला, भव्य शरीर का, सुखी और हमेशा प्रवास करने वाला होता है।

नारायणभट्ट---बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं वरिष्ठो धिया वैखरीवृत्तिभाजः। जना दिव्यचामीकरीभूतदेहाश्चिकित्साविदो दुश्चि-कित्स्या भवन्ति ॥ संकटों का नाश होता है, बुद्धिमान तथा वाचन और लेखन पर उपजीविका करनेवाला होता है। शरीर सोने के समान तेजस्वी होता है। वैद्यक का ज्ञान होता है। इनकी चिकित्सा करना कठिन होता है।

जीवनाथ—इसका मत उपर्युक्त मतों में आ गया है।

पुंजाचार्य—यदा लग्नगते सौम्ये युवा बालायते किल। चंद्रपुत्रे च तत्रस्थे स नरस्तुवरप्रियः॥ यह तरुण होने पर भी बच्चे जैसा दीखता है। इसे तुवर की दाल बहुत भाती है।

घोलप—नीतिमान, हमेशा मंगल कार्य करने वाला, होता है। बंधु सुख अच्छा मिलता है। मातापिता का सुख भी मिलता है। ऐश्वर्यवान, उद्योगी तथा शत्रुहीन होता है।

गोपाल रत्नाकर—बहुश्रुत, मांत्रिक, पिशाच बाधा दूर करने वाला, तथा राजमान्य होता है।

हिल्लाजातक—दशमे वत्सरे कान्तिं बुधो यच्छति लग्नगः। दसवें वर्ष शरीर सौन्दर्य प्राप्त होता है।

यवनमत—यह बुध अग्नितत्त्व की राशि में हो तो चपल कुछ क्रोधी, नाटकों का शौकीन, वक्ता तथा गणित में प्रवीण होता है। धनु राशि में हो तो साहसी होता है। वृषभ, कन्या, या मकर में हो तो हठी और कपटी होता है। मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो बहुत बुद्धिमान, वक्ता, कलाओं का ज्ञाता तथा विद्याभ्यासी होता है। वृश्चिक में हो तो रसायनशास्त्रज्ञ, वैद्य, वैज्ञानिक, स्वार्थी और ठगाने-वाला होता है। कर्क या मीन में हो तो चित्त स्थिर नही होता। वाचन, लेखन और पण्डिताई में प्रवीण होता है। शनि के साथ बुध के अशुभ योग हों तो बहुत बुरे फल मिलते हैं।

अज्ञात—क्षमी, सप्तविंशतिवर्षे तीर्थयात्रायोगः। पापक्षेत्रे युते देहे रोगः पित्तपाण्डुरोगः। अंगहीनः। सज्जनद्वेषी, नेत्ररोगी, वंचकः। सप्तदशवर्षे भ्रातॄणामन्योन्यकलहः। श्रेष्ठलोकं गमिष्यति। पापयुते दृष्टे नीचर्क्षे पापलोकं गमिष्यति। शय्यासुखवर्जितः। क्षुद्रदेवतोपासकः। पापमंदादियुते वामनेत्रे हानिः। षष्ठेशयुते नीचेशयुते दोषवान्। अपात्र-व्ययवान्। पापमतिः। शुभयुते निश्चयेन धनधान्यादिमान्, धार्मिक-बुद्धिः, अस्त्रवित्, तर्कशास्त्रान्वितः, दृढगात्रः। यह क्षमावान होता है। २७ वें वर्ष तीर्थ यात्रा का योग होता है। पापग्रह की राशि में अथवा उसके साथ हो तो पित्त और पाण्डु रोग होते हैं। कोई अवयव कम होता है। सज्जनों का द्वेष करता है। आंखों के रोग होते हैं। ठगाता है। १७ वें वर्ष भाइयों में परस्पर झगडा होता है। शय्या-

सुख नही मिलता। क्षुद्र देवों की उपासना करता है। शनि आदि पापग्रहों से युक्त हो तो बाई आंख को हानि होती है। षष्ठेश अथवा नीचेश साथ हो तो दोष्युक्त होता है। अयोग्य कार्य में धन खर्च करता है। बुद्धि पापी होती है। शुभग्रह के साथ हो तो धनधान्य मिलता है, बुद्धि धार्मिक होती है, शस्त्रास्त्रों का ज्ञान मिलता है, सुखी, तर्कशास्त्रज्ञ तथा सुदृढ शरीरवाला होता है।

मेरे विचार—अबतक शास्त्रकारों के जो मत दिए वे बुध अपने स्थान में अकेला है ऐसा समझ कर दिए हुए हैं। परन्तु बुध हमेशा रवि से आगे या पीछे ३० अंशों के भीतर ही होता हैं। इसीसे उसके अस्त और उदय होते रहते हैं। इसी प्रकार शुक्र भी प्रायः बुध के समीप ही होता है। कभी कभी अन्य ग्रह भी साथ होते हैं। इसलिए इस ग्रह के स्वतन्त्र फलों का वर्णन करना कठिन है। शास्त्रकारों ने जो शुभ फल कहे वे पुरुष राशियों में मिलते हैं तथा अशुभ फल स्त्री राशियों में मिलते हैं। बृहद्‌यवनजातक तथा यवनमत में बहुत पुत्र होना यह फल कहा है। यह बुध स्त्री राशि में हो तो मिलता है। जागेश्वर ने वंशक्षय यह फल कहा। इसका अनुभव मिथुन, धनु और कुम्भ में आता है। मेष, सिंह, तथा तुला में एकाध दूसरा लडका रहता है। बुध स्त्री राशि में हो तो ३२ वें वर्ष तक बहुत खाने की प्रवृत्ति होती है फिर आहार कम होता है। बृहद्‌यवनजातक के अनुसार दसवें वर्ष कीर्ति मिलती है। आजकल गायन वादन, नृत्य अथवा सिनेमा के क्षेत्र में बच्चों को ऐसी प्रसिद्धि मिल सकती है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध गायक बालगन्धर्व तथा मास्टर बर्वे इसके उदाहरण हैं। हिल्लाजातककार ने इसी वय में शरीरकान्ति बढना यह फल कहा है। वसिष्ठ ने चौथे वर्ष मृत्युयोग कहा है किन्तु यह गलत

है। बुध से मृत्यु का विचार हो ही नहीं सकता। एकाध कुण्डली में ऐसा योग देखकर सामान्य फलादेश कहना ठीक नही है। ऐसी अपवादात्मक कुण्डली का एक उदाहरण आगे दिया है—
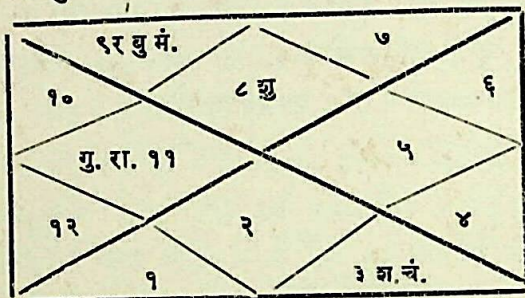
नारायणभट्ट ने लेखन कला पर उपजीविका करना यह फल कहा है। उनके समय में वृत्तपत्र या मुद्रणालय नही थे इसलिए इस फल का विशेष अनुभव नही मिल सकता था। आजकल इसका अच्छा उपयोग हो सकता है। अज्ञात ने १७ वें वर्ष भाइयों में कलह का फल कहा है। किन्तु इस वय में इस्टेट के स्वामित्व की भावना प्रबल नही होती अतः इसका अनुभव नही आ सकता।

मेरा अनुभव—मेष, सिंह, धनु और मिथुन इन राशियों के पहले १५ अंशों में बुध हो तो पहले बुधप्रधान व्यक्तियों के जो दो प्रकार कहे उनमें पहले प्रकार का शरीर होता है। यही स्थिति कन्या तथा मीन राशियों के उत्तरार्ध में बुध हो तो समझना चाहिए। दूसरे प्रकार का शरीर कन्या और मीन के पूर्वार्ध में तथा वृषभ, मकर, मिथुन और धनु के उत्तरार्ध में बुध हो तो मिलता है। कर्क या तुला में यह बुध हो तो शरीर बहुत कृश, ऊंचा तथा आंखें छोटीं और रंग बहुत गोरा होता है। यह बुध पुरुष राशि में हो तो शिक्षा जलदी

पूरी होती है। लेखक, प्रकाशक या संपादक होते हैं। यह बुध, वृषभ, कन्या या मकर में हो तो व्यापारी होते हैं। वडी फर्मों में नौकरी मिलती है। कर्क, वृश्चिक या मीन में हो तो कम्पाउन्डर, प्रूफ रीडर आदि का व्यवसाय मिलता है। यह बुध पुरुष राशि में हो तो ३६ वें वर्ष लाभ होता है, लेखन में कीर्ति मिलती है। यह वृषभ, कन्या या मकर में हो तो लोगों में मिलना जुलना प्रिय नहीं होता, एकान्त प्रिय होता है। स्वभाव नीच, वडबडेपन की प्रवृत्ति, परस्त्रियों में आसक्ति तथा कुत्सित बोलना ये फल मिलते हैं। हमेशा लोगों की बुराई ढूंढते हैं। स्वार्थी, ठगानेवाले, खर्च के वारे में चिकित्सक, किसी का उपकार न करने वाले होते हैं। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में यह बुध हो तो स्वभाव इससे कुछ अच्छा होता है। किन्तु वृश्चिक में हो तो समालोचना में कटु और तीखी भाषा का प्रयोग करते हैं। धनु राशि में यह बुध हो तो समालोचना निर्भीक, मर्मभेदी किन्तु सच्ची होती है। मेष, सिंह और धनु में यह बुध हो तो नकल करने की प्रवृत्ति होती है।

धनस्थान

आचार्य तथा गुणाकर--धनी।

कल्याणवर्मा--बुद्ध्योपार्जितविभवो धनभवनगतेऽन्नपानभोगी च। शोभनवाक्यः सुनयः शशितनये मानवो भवति॥ अपनी बुद्धि से धनार्जन करता है, खानपान का सुख अच्छा मिलता है, बोलना तथा नैतिक प्रवृत्ति अच्छी होती है।

वैद्यनाथ--बुद्ध्योपार्जितवित्तशीलगुणवान् साधुः कुटुंबे बुधे ॥ शीलवान, गुणी, सदाचारी तथा अपनी बुद्धि से धनार्जन करने वाला होता है।

कालचिन्तामणि—बुधे धने विलोकिते वा धनाढ्यो राजपूजितः। पटुभाषी धने नष्टे पुनरन्यच्च लभ्यते ॥ धनवान और राजमान्य तथा बोलने में कुशल होता है। एक वार धन नष्ट हुआ तो भी फिर प्राप्त होता है।

गर्ग--त्वग्दोषं कुरुते नित्यं सोमपुत्रः कुटुंबगः। हमेशा त्वचारोग होते रहते हैं।

उदय भास्कर--हरिबुधो यदि वा घटवाक्पतिः वपुषि तत् पुरुषत्रयजं धनं। समृद्ध चेद्धनमेत्यधिकारवद् बहुतदास्यवधूधनभृद् भवेत् ॥ सिंह राशि में बुध या कुंभ राशि में गुरु धनस्थान में हो तो तीन पीढियों की संपत्ति प्राप्त होती है। स्वभाव नम्र होता है। अधिकार मिलता है। दासदासी बहुत होते हैं। स्त्रीधन प्राप्त होता है।

बृहद्यवनजातक--विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलता कलितार्थमहत्सुखं। विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने ॥ शीलवान, गुरुओं पर प्रेम करनेवाला, कुशल, धन संग्रह करके सुख प्राप्त करनेवाला, कान्तिमान, तथा प्रगतिशील होता है। षट्त्रिंशकैर्धनकृतिम्। ३६ वें वर्ष धनलाभ होता है।

यवनमत—कोटीश्वरः चंद्रसुतः सदैव। कोटयधीश होता है।

काशीनाथ—धनभावे चंद्रपुत्रे धनधान्यादिपूरितः। शुभकर्मा सुखी नित्यं राजपूज्यश्च जायते ॥ धनधान्य से युक्त, शुभ कर्म करनेवाला, सुखी तथा राजमान्य होता है।

जीवनाथ--विधोः पुत्रे वित्ते प्रवरमतिरज्ञोपि कृतिनाम् समाजस्थो वाचस्पतिरिव सदा भासत इति। प्रतापी गीतज्ञो भ्रमर इव भोगी क्षितितले महोदारः शश्वत् सुरतरुरिव श्रीपतिसमः ॥ अज्ञ होने पर भी विद्वानों की सभा में बृहस्पति जैसा शोभित होता है। प्रतापी, संगीत का ज्ञाता, भ्रमर के समान भोगी, तथा कल्पवृक्ष के समान उदार होता है।

नारायणभट्ट--धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः सभासंगतो भासते व्यास एव। पृथूदारता कल्पवृक्षस्य तद्वत् बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोयम् ॥ इसका अर्थ प्रायः जीवनाथ के समान ही है।

आर्यग्रन्थकार--भवति च पितृभक्तः सुस्थितः पापभीरुर्मृदुतनुखरगोमा दीर्घकेशोऽतिगौरः। धनगतशशिसूनौ सत्यवादी विहारी बहुतरवसुभागी सर्वकालप्रवासी ॥ पिता पर श्रद्धा रखनेवाला, अच्छी स्थिति में रहनेवाला, पापभीरु, कोमल शरीर का, बहुत गोरा, सच बोलनेवाला, चैनी, बहुत धनवान तथा सदा प्रवास करनेवाला होता है। इसके केश लंबे किंतु रूखे होते हैं। क्षेमसौख्यशुचिवित्तसुखैर्युक् सत्क्रियोऽखिलसुहृद्धनसंस्थे ॥ सुखी, पवित्र, धनवान, सदाचारी और सब लोगों का मित्र होता है।

जागेश्वर—धने बोधने वक्ति माधुर्यमिश्रं धनं वर्धते बाहुतेजाः स भोगी। भवेत्संसदि सिंहतुल्यः स वक्ता वदान्यस्तदुक्तं न व्यर्थं विरुद्धम् ॥ मधुर बोलता है, धन की वृद्धि होती है, तेजस्वी तथा भोगी होता है। सभा में इसकी वक्तृता सिंह के समान तेजस्वी होती है। उदार होता है। इसका बोलना व्यर्थ या विरुद्ध नहीं होता।

पुंजाचार्य—ज्ञे वाग्मी स स्यात् पुरुषः सौम्यवक्त्रः। स्याद् बुद्ध्योपार्जितस्वः कविरमलवचा वाधिमिष्टान्नभोक्ता। बोलने में कुशल,

सौम्य चेहरे का, अपनी बुद्धि से धनार्जन करनेवाला, मिष्टान्न खानेवाला तथा निर्दोष भाषण करनेवाला होता है।

रामदयाल—पुंजराज के समान ही मत है।

वसिष्ठ—धन प्राप्त होता है।

घोलप—मित्रों से युक्त, सब सुखों का भोक्ता, सभा में सुशोभित होनेवाला, श्रेष्ठ, पराक्रमी, पुरुषों में मुख्य, गुरुओं की सेवा करनेवाला, ऐश्वर्यशाली, शूर, काव्य का ज्ञाता, बुद्धिमान तथा चतुर होता है।

गोपालरत्नाकर—पुत्रों से युक्त, वेदशास्त्रों का ज्ञाता, कोमल बोलनेवाला, संकल्पित कार्य पूरे करनेवाला, धनवान, अपने परिश्रम से प्राप्त धन का उपभोग लेनेवाला, धान्य संग्रह करने वाला होता है।

हिल्लाजातक—षड्विंशे वत्सरे चान्द्रिर्धननाशं द्वितीयगः। २६ वें वष धनहानि होती है।

यवनमत - मधुर बोलनेवाला, थोडा दान देनेवाला, बुद्धिमान, नम्र, कुटुंबवत्सल, नीति का अनुसरण करनेवाला तथा धनवान होता है। इसके मित्र नीच स्वभाव के होते हैं।

पाश्चात्य मत--यह शुभ योग में हो तो बहुत बलवान होता है। लेखन, वाचन, प्रवास, दलाली, लिपिक का काम, हिसाब का काम आदि व्यवसायों में धन प्राप्त करता है। शास्त्रीय ज्ञान, व्यापार और शिक्षा विषयक व्यवहार में यह प्रवीण होता है। नीतिमान, अंतर्ज्ञानी, उद्योगप्रिय, न्याय करने में कुशल होता है। कार्यशक्ति तीव्र होती है। अकस्मात धन लाभ होता है।

अज्ञात - कोटीश्वरः, भोगी, वाचालः, शास्त्रविचक्षणः, धनी, गुणाढ्यः, सद्गुणी, पंचदशवर्षे बहुविद्यावान् धनवान् लाभप्रदः। पाप-

युते पापक्षेत्रे अरिनीचगे विद्याहीनः, क्रूरत्वं, पवनव्याधिः। शुभयुति-वीक्षणादधिविद्यावान्। गुरुयुते वीक्षिते वा गणितशास्त्राधिकारेण संपन्नः।
कोट्याधीश, (द्रव्य तथा स्त्रियों का) उपभोक्ता, वाचाल, शास्त्र-चर्चा में प्रवीण, गुणवान होता है। १९ वें वर्ष बहुत ज्ञान प्राप्त होता है तथा धनवान होता है। पापग्रह साथ हों अथवा पापग्रह की राशि में या शत्रुग्रह की राशि में या नीच राशि में हो तो विद्याभ्यास नही होता, स्वभाव क्रूर होता है, वातरोग होते हैं। शुभग्रह साथ हों या उनकी दृष्टि हो तो बहुत विद्याभ्यास होता है। गुरु के साथ हो या उसकी दृष्टि हो तो गणितशास्त्र में प्रवीण होता है।

मेरे विचार—धनस्थान के बुध के विषय में शास्त्रकारों ने जो फल कहे हैं उनमें शुभ फल पुरुष राशियों के तथा अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं। वृहद्यवनजातक में ३६ वें वर्ष धनलाभ होता है ऐसा कहा है उसका अच्छा अनुभव आता है। अज्ञात ने १९ वें वर्ष धन और विद्या प्राप्त होने का फल कहा उसका अनुभव नही आता। इसी तरह हिल्लाजातक का मत भी ठीक प्रतीत नही होता। वास्तव में बुध सम्पत्ति का कारक नही है। भारत में लेखकों को द्रव्यलाभ कम ही होता है। गुजराती, मारवाडी, कच्छी, जैन, मेमन आदि व्यापारी वर्गों के व्यक्तियों की कुण्डली में धनस्थान में बुध हो तो विपुल धन मिलने का फल कहना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में प्रिन्सिपल, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, तथा डाररेक्टर आदि अफसरों को वेतन अच्छा मिलता है अतः इस दृष्टि से धनलाभ का फल कह सकेंगे।

मेरा अनुभव—वस्तुतः शुक्र और शनि ये दो ग्रह विपुल धनप्राप्ति के कारक हैं। शुक्र से नगदी पैसों का और शनि से स्थावर

इस्टेट का विचार करना चाहिए। किन्तु अन्य कोई भी ग्रह धनस्थान में हो तो उसका भी धनप्राप्ति पर परिणाम होता ही है। मिथुन या कर्क के सिवाय अन्य लग्न की कुण्डलियों में धनेश वक्री हो तो धनस्थान में बुध होने पर (शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो भी) वह दारिद्र्य योग होता है। लग्न में पुरुष राशि हो और धनस्थान में स्त्री राशि में बुध हो तो (धनेश वक्री न हो तो) अच्छा धनलाभ होता है और जीवन में सफलता मिलती है। शिक्षा रुकावटों के बाद पूरी होती है। बोलना तीव्र, अधिकारपूर्ण होता है। बरताव निर्भीक होता है। बुद्धिमान और लेखक होते हैं। खाना बहुत रुचिकर चाहिए। मृत्यु के पूर्व ज्ञान और बुद्धि से बहुत कीर्ति प्राप्त होती है। धनेश वक्री हो तो धन कम मिलता है। सन्तति प्राप्त नही होती। यह व्यक्ति बहुत पढालिखा न होने पर भी लोग उसे विद्वान मानते हैं। जीवन असफल होता है। मृत्यु के बाद कीर्ति मिलती है। भावी जीवन की चिन्ता ये लोग कभी नही करते।

तीसरा स्थान

आचार्य – प्रखल:। बहुत दुष्ट होता है।

गुणाकर – दुर्जन:।

कल्याणवर्मा—श्रुतिनिरत: परिदीनस्तृतीयराशौ बुधे भवति जात:। निपुण: सहजसमेतो मायाबहुलो नरश्चलित:। वेदाभ्यास में मग्न, दीन स्वभाव का, निपुण, धनहीन, बन्धुओं से युक्त, बहुत मायावी और अस्थिर होता है।

वैद्यनाथ—मायाकर्मपरोऽटनोऽतिचपलो दीनोऽनुजस्थे बुधे। मायावी, प्रवासी, बहुत चपल और दीन होता है।

गर्ग—बुधे च सहजस्थाने दृष्टिमित्रो विलोकिते। भ्रातृणां भगिनीनां च सुखं तस्य महद् वदेत्॥ भ्रातरः पंच विद्यन्ते शत्रुदृष्ट्या मृतिं वदेत्। चतस्त्रः पंच वा ज्ञेयाः स्वसारः शुभलक्षणाः॥ कुजन शनिना दृष्टे तासां वन्ध्यत्वमिष्यते। बुधो वा तत्र संस्थितः, स्वसृचाहुल्यतां तस्य कुर्वन्ति न हि संशयः। बुधौ त्रितये। बुधश्च शताधिपः॥ भाई और बहनों को बहुत सुख प्राप्त होता है। इसे पांच भाई और चार या पांच बहनें होतीं हैं। इस बुध पर शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो भाइयों की मृत्यु होती है। शनि या मंगल की दृष्टि हो तो बहनें वंध्या होती हैं। इसे बहुत मित्र होते हैं।

वैष्णवतन्त्र--लग्नात् तृतीयभवने यदि सोमसुतो भवेत्। द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्त्रो जायन्ते नात्र संशयः॥ इसे दो लडके और तीन लडकियां होती हैं।

बृहद्‌यवनजातक—साहसी च परिवारजनाढ्यश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः। मानवः कुशलवान् हितकर्ता शीतभानुतनुजेऽनुजसंस्थे॥ यह साहसी तथा बडे परिवार से युक्त होता है। इसका चित्त शुद्ध नही होता तथा सुख नष्ट होता है। यह चतुर तथा हितकारी होता है। शोर्काब्दवित्तविलयं। १२ वें वर्ष धनहानि होती है।

आर्यग्रन्थकार—बृहद्‌यवनजातक के समान मत है।

वसिष्ठ—ऋद्धिं, अन्यभीतिम्। यह समृद्ध होता है, दूसरों का डर होता है।

काशीनाथ—तृतीयस्थे बुधे जातः प्रशस्तो बन्धुमानितः। धर्मध्वजी यशस्वी च गुरुदेवार्चको भवेत्॥ यह अच्छे शरीर का, बन्धुओं को प्रिय, धार्मिक, यशस्वी तथा देव और गुरुओं का आदर करनेवाला होता है। स्वजनयुक् जडधीर्बहुसाहसः कुमलता कुमनास्त्र-

गते बुधे ॥ स्वजनों से युक्त, मन्द बुद्धि का, साहसी, अशुभ विचार करनेवाला होता है।

नारायणभट्ट—वणिक्मित्रतापण्यकृद्वृत्तिशाली वशित्वं धियो दुर्वशानामुपैति। विनीतोऽतिभोगं भजेत् संन्यसेद् वा तृतीयेऽनुजैराश्रितो द्रुमे लतावत् ॥ व्यापार से तथा व्यापारियों की मित्रता से धन प्राप्त करता है। बुद्धि से दूसरों को वश में लाता है। नम्र होता है। एक तो बहुत उपभोग करता है या संन्यास लेता है। वृक्ष को लताएं वेष्टित करती हैं उसी तरह इसे भाइयों को आश्रय देना होता है।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

जागेश्वर—बुधे बुद्धिमान् विक्रमे धर्मशीलो भवेल्लीलया रोग-भाक् सर्वकालम्। स्वसारो भवन्ति ध्रुवं पंच खेटास्तथा साहसी चित्त-शुद्धया विहीनः ॥ यह बुद्धिमान, धर्मशील, सदा रोगी रहनेवाला तथा साहसी होता है। इसे पांच बहने होती हैं। इसका चित्त शुद्ध नही होता।

मन्त्रेश्वर—शौर्यं शूरः समायुः सुसहजसहितः सश्रमो दैन्य-युक्तः। पराक्रमी, मध्यम आयु का, अच्छे भाइयों से युक्त, श्रम करने-वाला तथा दीन होता है।

घोलप—धनुर्धारी, देशभक्त, शोभायुक्त, अच्छे पुत्रों से युक्त, कवि, अहंकारी, तेजस्वी, ऐश्वर्यवान, विलासी, अच्छे भाइयों से युक्त होता है। इसकी पत्नी सुन्दर होती है।

गोपाल रत्नाकर—सुखी तथा सम्पत्तिमान होता है। भाई बहिनें बहुत होती हैं और उनपर प्रेम भी रहता है।

हिल्लाजातक—तृतीयो द्वादशे वर्षे। १२ वें वर्ष धनलाभ होता है।

यवनमत—यह शीलवान, धनवान, दयालु, मित्र तथा स्त्रियों को प्रिय एवं सर्वदा आनंदी होता है।

पाश्चात्य मत—यह बुध वायुतत्त्व की राशि में हो तो अभ्यास की ओर प्रवृत्ति होती है। शास्त्रकार, ज्योतिष तथा गुप्त विद्याओं में प्रवीण होता है। यह कर्क या मीन राशि में हो और इसपर शनि की दृष्टि न हो तो चित्त अस्थिर और डरपोक होता है। लेखन, वाचन और भाषण में कुशल होता है। प्रवास से सुख और लाभ होता है। गुरुकी दृष्टि हो तो न्याय करने की प्रवृत्ति होती है। मंगल के साथ इस बुध का शुभयोग हो तो भूगर्भ शास्त्र में प्रवीणता प्राप्त होती है। परोपकारी वृत्ति होती है। पडोसियों और परिचितों से प्रेमपूर्वक बरताव करते हैं। प्रवास बहुत करना पडता है।

अज्ञात—भ्रातृमान्, बहुसौख्यवान्। पंचदशवर्षे क्षेत्रपुत्रयुतः। धनलाभवान्, सद्गुणशाली। भावाधिपे बलयुते दीर्घायुः। धैर्यवान्। भावाधिपे दुर्बले भ्रातृपीडा भीतिमान्। बलयुते भ्राता दीर्घायुः॥ भाई होते हैं, सुख बहुत मिलता है। १५ वें वर्ष खेती तथा सन्तति प्राप्त होती है। धनवान तथा सद्गुणी होता है। तृतीय स्थान का स्वामी बलवान हो तो दीर्घायु और धैर्यवान होता है। वह दुर्बल हो तो डरपोक होता है तथा भाइयों को तकलीफ होती है। बलवान हो तो भाई दीर्घायु होता है।

मेरे विचार—नैसर्गिक कुण्डली में तृतीय स्थान पर बुध का अधिकार है। तदनुसार शास्त्रकारों ने फल कहे हैं। यह स्थान मिथुन राशि का है अतः स्त्री तथा पुरुष ऐसे दो प्रकार के फल मिलते हैं। वक्ता, कवि, ज्योतिषी, लेखक आदि वर्गों के लोगों के लिए यह स्थान अच्छा होना आवश्यक है। इन लोगों का जीवन अपने विचार व्यक्त

करने पर ही अवलंबित होता है। मेरे विचार से शुभ ग्रहों के लिए तृतीय स्थान अच्छा नही–दारिद्रय दर्शक है। शास्त्रकारों ने यहां जो शुभ फल कहे हैं वे मेष, सिंह, तुला, कुंभ तथा मिथुन और धनु का पूर्वार्ध एवं कन्या और मीन का उत्तरार्ध इन राशियों के हैं। अशुभ फलों का अनुभव कन्या और मीन के पूर्वार्ध में, मिथुन और धनु के उत्तरार्ध में तथा अन्य स्त्री राशियों में आता है। हिल्लाजातककार ने १२ वें वर्ष धन लाभ का फल कहा है और यवनजातक में इसी वर्ष धनहानि का फल कहा है, इन में यवनजातक का मत ठीक मालूम होता है क्यों कि बुध तृतीय में हो तो रवि प्रायः धनस्थान में या चतुर्थस्थान में होता है इस लिए पैतृक संपत्ति नष्ट होती है और पिता दरिद्री होता है। अज्ञात ने १९ वें वर्ष पुत्रप्राप्ति का फल कहा वह असंभव प्रतीत होता है। खेती प्राप्त होने का फल कहा वह पैतृक संपत्ति के रूप में या किसी के उत्तराधिकार के रूप में मिल सकता है। अन्यथा १२ वें वर्ष स्वयं धन उपार्जन करना स्वाभाविक नही है। इसी प्रकार घोलप के मत में भी कुछ असंभवनीय विचार हैं।

मेरा अनुभव– इस स्थान में बुध पुरुष राशि में हो तो शिक्षा पूरी होती है। बुद्धि शान्त और विचार सुसंगत होते हैं। मन की प्रवृत्ति अभ्यास की ओर होती है। हस्ताक्षर अच्छा होता है। लेखन जलदी और सुसंगत होता है। स्मरणशक्ति अच्छी होती है। यही बुध स्त्री राशी में हो तो इस से उलटा अनुभव आता हैं। तृतीय में बुध, धनस्थान में शुक्र और इन दोनों में किसी एक स्थान में रवि ऐसा योग हो और धनु, कर्क या कन्या लग्न हो तो वे व्यक्ति निसर्गतः ज्योतिषशास्त्र में कुशल होते हैं। धनस्थान में बुध और तृतीय में शुक्र हो तो भी यह योग होता है। डाक्टर तथा जज लोगों को भी यह

अच्छा योग होता है। इन्हें दिमाग शान्त रख कर दूसरों का कहना सुनना पडता है और निर्णय लेना होता है। ऐसे डाक्टरों की चिकित्सा और न्यायाधीशों के निर्णय उत्तम होते हैं। लेखन, मुद्रण, और प्रकाशन के व्यवसाय इस योग पर होते हैं। रहने का स्थान हमेशा बदलना पडता है। यह बुध बलवान हो तो २४ वें वर्ष से, मध्यम बली हो तो ३० वें वर्ष से तथा अनिष्ट ग्रह से युक्त हो तो ३६ वें वर्ष से भाग्योदय होता है। पापग्रह का संबंध हो तो भी इसे बहुत अनिष्ट फल नही मिलते।

चौथा स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—पण्डितः।

कल्याणवर्मा—पण्डितमाहुः सुभगो वाहनयुक्तो बुधे हिबुकसंस्थे। सुपरिच्छदः सुबंधुर्भवति नरः पण्डितं नित्यम्॥ विद्वान्, सुन्दर वाहनों का स्वामी, तथा अच्छे परिवार से युक्त होता है।

वैद्यनाथ—बन्धुस्थे शशिजे बित्रन्धुरमलज्ञानी धनी पण्डितः। इसे आप्त स्वकीय नहीं होते। इसका ज्ञान शुद्ध होता है। यह धनवान और पण्डित होता है। जातो विद्याविनयचतुरश्चन्द्रसूनौ बलिष्ठः। यह विद्यावान, नम्र, चतुर और बलवान होता है।

गर्ग—बहुमित्रो बहुधनो बन्धौ पापं विना बुध। नानारसविलासी च सपापे त्वन्यथा फलम्॥ चित्रं बुधे च विज्ञेयं बुधे स्वर्णं गृहे तस्य। बुधश्च सर्वकार्येषु मित्रो मिश्रफलप्रदः॥ इस स्थान में बुध पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट न हो तो बहुत धन मिलता है और मित्र बहुत होते हैं। नाना रसों का उपभोग लेता है। पापग्रह का संबंध

हो तो उलटा फल मिलता है। रहने का स्थान चित्रविचित्र होता है। इस बुध के फल मिश्र होते हैं।

बादरायण—सौम्ये चाल्पसुतत्वं। पुत्र कम होते हैं।

यवनमत—बुधस्तु पत्न्याहितबन्धुसौख्यं बन्धौ परावासक्ताधिवासम्। पत्नी और बन्धुओं का सुख अच्छा मिलता है। पापग्रहों का संबंध हो तो दूसरों के घर रहना पडता है।

काशीनाथ—चतुर्थे चन्द्रपुत्रे च बहुभृत्ययशोन्वितः। पटुवाक्यो भाग्ययुक्तः सत्यवादी च जायते॥ बहुत नौकर चाकर होते हैं। कीर्तिमान, बोलने में चतुर, भाग्यवान और सच बोलनेवाला होता है।

बृहद्यवनजातक—पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मंत्रवादकुशलं च सुशीलं। मानवं किल करोति सुलीलं शीतदीधितिसुतः सुखसंस्थः॥ पुत्रों का सुख मिलता है। बहुत मित्र होते हैं। मंत्रतंत्र जानता है। शीलवान और सदाचारी होता है। ज्ञो वित्तहा यमयमैः। २२ वें वर्ष धनहानि होती है।

वसिष्ठ—सौख्यान्वितं च धनं। सुखी और धनवान होता है।

जयदेव—सधनवाहनगीतगुणोऽटनो गृहसुखः सुखगः शशिजो वशः। धनवान, वाहनों से युक्त, संगीत में प्रवीण, प्रवासी, घर के बारे में सुखी और कीर्तिमान होता है।

नारायणभट्ट—चतुर्थे चरेच्चन्द्रजश्चारुमित्रो विशेषाधिकृद् भूमिनाथो गणस्य। भवेल्लेखको लिख्यते वा तदुक्तं तदाशापरैः पैतृकं नो धनं च॥ मित्र उत्तम होते हैं। राजा, गण का स्वामी या विशेष अधिकारी होता है। यह लेखक होता है अथवा इसका कहा हुआ दूसरों द्वारा लिखा जाता है। पैतृक धन नही मिलता।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

जागेश्वर—बुधे तुर्यगे वैभवेदिष्टिकाथैः पितुर्भाग्यवान् सुन्दरः। पिता के संबंध से भाग्यवान और सुन्दर होता है।

मन्त्रेश्वर—संख्यावान् चाटुवाक्यः। गणितशास्त्र का ज्ञाता तथा मीठा बोलनेवाला होता है।

आर्यग्रन्थकार—बहुतरधनपूर्णो भ्रातृहर्ता च पापे बहुतरबहुपत्नी पूर्णगेहे स्वतुगे। तरलमतिरलज्जः क्षीणजंघः कृशांगः शिशुवयसि च रोगी बन्धुसंस्थे कुमारे॥ बहुत धनवान होता है। यह अशुभ हो तो भाइयों का नाश करता है। बलवान या उच्च हो तो कई पत्नियां होती हैं। इसकी बुद्धि तरल और शरीर दुबलापतला होता है। यह निर्लज्ज होता है और बचपन में इसे रोग होते हैं।

घोलप—सुन्दर, वाहन सुख से युक्त, राजा का मित्र अपने कुल को भूषणभूत, उत्तम स्थान में रहनेवाला, अधिकारी, पराक्रमी, धनवान, अनेक विद्याओं का अभ्यास करनेवाला, तथा उत्तम घर में रहनेवाला होता है।

हिल्लाजातक—द्वाविंशे चतुर्थगः पुत्रं च। २२ वें वर्ष पुत्र होता है।

गोपालरत्नाकर—हस्तकलाओं में कुशल, खेती में रुचि रखनेवाला और कुटिल होता है।

यवनमत - इसका शरीर पुष्ट होता है। पुत्र का दुःख प्राप्त होता है। आरंभ किए हुए कार्य में इसे सफलता मिलती है। यह संगीतप्रिय और मिष्टभाषी होता है। यह जैसे बोलता है वैसे बरताव नही करता। अपने दिए वचन को तात्काल भूल जाता है। बहुत आलसी होता है।

पाश्चात्य मत—यह बुध मिथुन या कन्या राशि में हो तो आयु का अन्तिम भाग अच्छा जाता है। इसे संसार के बारे में बहुत चिन्ता होती है। स्मरणशक्ति बहुत तीव्र होती है तथा अन्तर्ज्ञान भी हो सकता है। इसका शनि के साथ अशुभ योग हो तो चोरी या विश्वासघात से इसका नुकसान होता है। माँबाप से अच्छा लाभ होता है।

अज्ञात—धैर्यवान्। विशालाक्षः। मातृपितृसुखयुक्तः। विभूषायोषांगं प्रवरतुरगाणाम्। ज्ञानवान्। सुखी। षोडशवर्षे द्रव्यापहाररूपेण बहुलाभप्रदो भवति। गुरुशुक्रशनियुते अनेकवाहनवान्। भावाधिपे बलयुते आन्दोलिकाप्राप्तिः। राहुकेतुशनियुते वाहनविघ्नवान् क्षेत्रे सुखवर्जितः। बन्धुकुलद्वेषी॥ धैर्यवान, सुखी, ज्ञानवान होता है। आंखें बडी होती हैं। मातापिता का सुख मिलता है। स्त्रियों तथा आभूषणों का सुख मिलता है। अच्छे घोडे मिलते है। १६ वें वर्ष दूसरों के धन का अपहार करने से बहुत लाभ होता है। गुरु, शुक्र, शनि के साथ हो तो बहुतसे वाहन मिलते हैं। राहु, केतु या शनि साथ हो तो वाहनों से भय होता है। जमीन का सुख नही मिलता। बान्धवों का द्वेष करता है।

मेरे विचार—विद्वान और ज्ञानी होना यह फल कुछ शास्त्रकारों ने कहा है किन्तु इसका अनुभव किसी भी राशि में नहीं आता। यवनमत में पुत्रदुःख और बृहद्यवन में पुत्रसुख ऐसे परस्पर विरुद्ध फल दिए हैं। यदि रवि पंचम में हो तो पुत्रहानि का फल मिलेगा और रवि तृतीय में हो तो पुत्रसुख का फल मिलेगा। यवनमत में २२ वें वर्ष धनहानि का फल कहा है और हिल्लाजातक में इसी वर्ष पुत्रलाभ कहा है। इन दोनों का अनुभव आता है। बुध चतुर्थ स्थान में

निर्बल होता है ऐसा एक शास्त्रकार ने कहा है। कुण्डली में यदि वृषभ, कन्या या मकर लग्न हो तो ही यह मत ठीक होगा। अज्ञात ने कहे हुए फल बिलकुल गलत प्रतीत होते हैं। १६ वें वर्ष दूसरों के धन का अपहार करके धनलाभ होने की संभावना बहुतही कम है। संक्षेप में देखा जाय तो शास्त्रकारों ने जो शुभ फल कहे हैं वे पुरुष राशियों के हैं तथा अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं ॥

मेरा अनुभव—इस स्थान में बुध पुरुषराशि में हो तो कुछ विद्याभ्यास होता है। किन्तु उसमें रुकावटें आती रहती हैं। यह मेष, सिंह या धनु में हो तो क्रोधी, एकान्तप्रिय और लोगों का अनिष्ट चाहनेवाला ऐसा स्वभाव होता है। मां से अच्छे संबंध नही होते। बेकार का अभिमान बहुत होता है। दूसरों को कभी साहाय्य नही करना और कंजूस होता है। मिथुन, तुला या कुंभ में यह बुध हो तो पिता से संबंध अच्छे नही होते। अपने ज्ञान का बहुत अभिमान होता है। दूसरों को मूर्ख समझने की प्रवृत्ति होती है। पैसा मूर्खता में खर्च करता है। शिक्षा अधूरी रहती है। स्त्रीराशि में यह बुध हो तो व्यापार में कुछ धन मिलता है। साथी व्यापारियों से झगडे करता है। थोडीसी इस्टेट और घरबार प्राप्त होते हैं।

पांचवा स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—मन्त्री। सलाह देता है।

कल्याणवर्मा—मन्त्राभिचारकुशलो बहुतनयः पंचमे सौम्ये। विद्यासुखप्रभावैः समन्वितो हर्षसंयुक्तः॥ मन्त्रविद्या और जारणमारण में कुशल होता है। बहुत पुत्र होते हैं। विद्यावान, सुखी और प्रभावशाली तथा आनन्दयुक्त होता है। चंद्रसुते संजाते रविगेहे दारिका-

बहुल: स्यात् । यह बुध सिंह राशि में हो तो कन्याएं बहुत होती हैं।

गर्ग—पंचमस्थश्चंद्रपुत्रः संतानं प्रकरोति हि। अस्तंगतः शत्रुदृष्टश्चोत्पन्नस्य विनाशकः॥ मातुला नश्यंति॥ सौम्ये चाल्पसुतत्वं॥ पंचम के बुध के फलस्वरूप सन्तान प्राप्त होती है। किन्तु यह बुध अस्तंगत हो या उसपर शत्रुग्रह की दृष्टि हो तो सन्तान की मृत्यु होती है। मामा का नाश होता है। पुत्र कम होते हैं।

वैद्यनाथ - मन्त्राभिचारकुशलः सुतदारवित्त विद्यायशोबलयुतः सुतगे सति ज्ञे॥ जारणमारणादि मंत्रों में कुशल तथा पुत्र, स्त्री, धन, ज्ञान, कीर्ति और बल से सम्पन्न होता है।

वृहद्यवनजातक—चतुर्थस्थान के समानही फल कहा है। शराब्दे मातुःक्षयं। ९ वें वर्ष माता का मृत्यु होता है।

काशीनाथ -पंचमे रोहिणेपुत्रे पुत्रपौत्रसमन्वितः। सुबुद्धिः सत्त्वसंपन्नः सुखी भवति मानवः॥ पुत्रपौत्रों से युक्त, अच्छी बुद्धि का, बलवान और सुखी होता है।

वसिष्ठ—बुधश्च स्वल्पात्मजं रुजं। सन्तान कम होती है और रोग होते हैं।

जयदेव मित्रपुत्रसुखयुक् शुभशीलो मंत्रशास्त्रविदसौ सुतगे ज्ञे॥ मित्र, पुत्र तथा सुख से युक्त, शीलवान, और मंत्रशास्त्र जाननेवाला होता है।

नारायणभट्ट—वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठत् भवेत् तस्य मेधार्थसंपादयित्री। बुधैर्भण्यते पंचमे रौहिणेये कियद् विद्यते कैतलस्याभिचारम्॥ पूर्व आयु में पुत्र नही होता, कन्याएं होती हैं। अपनी बुद्धि से धन प्राप्त करता है। जारणमारण में प्रवीण होता है।

जीवनाथ तथा जागेश्वर– नारायणभट्ट के समान मत है।

आर्यग्रन्थकार—तनयमन्दिरगे शशिनन्दने सुतकलत्रयुतः सुखभाजनं। विकचपंकजचारुमुखः सुखी सुरगुरुद्विजभक्तियुतः शुचिः॥ स्त्रीपुत्रों से युक्त, सुखी, पवित्र, तथा देव, गुरु और ब्राह्मणों का भक्त होता है। खिले हुए कमल के समान इसका मुख सुंदर होता है।

मंत्रेश्वर– वैद्यनाथ के समान मत है।

पुंजराज—ज्ञे समा। कन्यापत्यः। बुद्धि साधारण होती है। कन्याएं होती ह।

सूर्यजातक—शुभमतिः। बुद्धि शुभ होती है।

घोलप—सर्वत्र पूज्य होता है। पवित्र, सुंदर और कान्तिमान होता है। यह बुध मकर या कुंभ राशि में हो और उस पर पापग्रह की दृष्टि न हो तो कन्याएं होती हैं।

गोपालरत्नाकर—मामा की मृत्यु होती है। पिता को तकलीफ होती है। मां को सुख मिलता है। शारीरिक कष्ट होते हैं। राजदरबार में सन्मान मिलता है। तरहतरह के पोशाक करने की रुचि होती है। विद्यावान, दांभिक और कलहप्रिय होता है।

हिल्लाजातक–षड्त्रिंशे मातृहा पंचमो बुधः। २६ वें वर्ष माता की मृत्यु होती है।

जातकरत्न–विधौ विवाहतो नष्टः। पुत्र का ब्याह होते ही उसकी मृत्यु होती है।

अज्ञात—सौम्ये स्वक्षेत्रगते पंचमभे पुत्रभाग् भवति। सिंहस्थितेऽपि चैवं नवमे वा तृतीयभार्यायाम्॥ हिमसुतो गर्भहानिं करोति। पुत्रविघ्नं भवाधिपे पापयुते बलहीने पुत्रनाशः। अपुत्रः, दत्तपुत्रप्राप्तिः। पापकर्मी। यह बुध स्वगृह में हो तो पुत्रसन्तति होती है।

सिंह राशि में, तृतीयस्थान में अथवा सप्तम स्थान में हो तो भी पुत्र होते हैं। पंचमेश निर्बल हो अथवा पापग्रह के साथ हो तो पुत्रों का नाश होता है, गर्भ की हानि होती है। पुत्र न होने से दत्तक पुत्र लेना पडता है। यह पापकृत्य करता है।

यवनमत—सन्तति और धन की प्राप्ति होती है। धैर्यशील, सन्तोषी, कार्य में कुशल और यशस्वी होता है।

पाश्चात्यमत—सन्तति, विद्या और वैभव की प्राप्ति होती है। सट्टा, जुआ, साहस और चैन की ओर प्रवृत्ति होती है। यह बुध वंध्या राशि में हो तो वंशक्षय होता है। कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो बच्चे पागल होते हैं। इस बुध के साथ शनि—मंगल के योग हों तो यह दोष दूर रहता है। गुरु और शनि की शुभ दृष्टि इस बुध पर हो तो सट्टा और लाटरी में लाभ होता है। इस पर चन्द्र की दृष्टि हो तो लाभदायक फल मिलते हैं किन्तु यह एक व्यभिचार योग होता है।

मेरे विचार—कल्याणवर्मा आदि ने यहां मंत्र और जारणमारण में कुशलता का फल कहा है। किन्तु यह विषय वस्तुतः शुक्र के अधिकार में है। बुध के प्रभाव से दूसरों के मन्त्रों का प्रभाव दूर करने का सामर्थ्य मिल सकता है। प्रायः सभी शास्त्रकारों ने यहां सन्तति होने का फल कहा है। अतः बुध को नपुंसक ग्रह कहना ठीक नहीं यह स्पष्ट होगा। कुछ शास्त्रकारों ने मामा के मृत्यु का फल कहा यह कुछ अजीब ही प्रतीत होता है। मामा का विचार षष्ठ स्थान से करते हैं वहां से यह बारहवां स्थान है। किन्तु बुध जैसे निरुपद्रवी ग्रह से मृत्यु का फल बतलाना ठीक नहीं होगा। माता की मृत्यु के विषय में यवनमत में ९ वा वर्ष और हिल्लाजातक में २६ वां

वर्ग दिया है। इसकी सचाई अनुभव से ही देखी जा सकती है। वास्तव में पंचम स्थान से माता की मृत्यु का विचार करना योग्य नही। रवि चतुर्थ में होते हुए बुध पंचम में हो तो मां की मृत्यु का फल मिलता है। शास्त्रकारों ने इस स्थान में जो शुभ फल कहे वे पुरुष राशियों में मिलते हैं और अशुभ फल स्त्री राशियों में मिलते हैं। पुत्र कम होना, पुत्र न होना, कन्याएं होना ये फल मिथुन और तुला राशियों में मिलते हैं।

मेरा अनुभव—इस स्थान में पुरुष राशि में बुध हो तो वाणी अच्छी होती है। बुद्धि अति तीव्र होती है। शिक्षा जलदी पूरी होती है, आयु के २० से २३ वें वर्ष तक पूरी होती है। यह लेखक, कवि, नाटककार, उपन्यासकार होता है। वैज्ञानिक विषयों पर ग्रन्थ लिखता है। यह मिथुन, तुला या कुंभ राशि में हो तो सन्तति नही होती अथवा एक दो ही बच्चे होते है। लेखक हो तो ग्रन्थों को ही सन्तति मानना पडता है। लोक समुदाय में यह प्रभावशाली होता है। नम्र, मायावी और एकान्तप्रिय होता है। मेष, सिंह या धनु में यह बुध हो तो कुछ क्रोधी किन्तु सूक्ष्म बुद्धि का होता है। न्याय की ओर इसकी दृष्टि सदैव होती है। यह उदार और लोगों से मिल जुलकर रहनेवाला होता है। यह बुध वृषभ, कन्या या मकर में हो तो बुद्धि टेढी होती है शिक्षा अधूरी होती है, स्वभाव झगडालू होता है। सिर्फ कल्पनाओं पर ही वादविवाद करता है, लोगों को कुत्सित शब्दों से ताने देता हैं। सन्तति कम होती है और अच्छी नही होती। यह बडे बडे कार्यों में सलाह देता है और उसका प्रभाव भी पडता है। यह व्यवहार कुशल (Practical) होता है। किसी भी काम में दूसरों को आगे करके स्वयं पीछे रहता है। यह बुध कर्क, वृश्चिक या मीन में हो तो सन्तान

बहुत होती हैं। पहले तीन या पांच लडकियां होकर फिर लडका होता है। यह विश्वासपात्र नही होता। लोगों की बुराइयों की ओर बारीकी से ध्यान देता है। यह बुध मेष, सिंह या धनु में हो तो गणित, सालिसिटर का काम, तत्त्वज्ञान, ज्योतिष, नृत्य, फ्रेनालजी इन विषयों का अभ्यास होता है। वृषभ, कन्या या मकर में हो तो पदार्थ-विज्ञान, एविडन्सएक्ट, हस्तरेखा शास्त्र, इन का अभ्यास होता है। मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो वायुमापन शास्त्र, रोगचिकित्सा, मातृ-भाषा की पढाई, वैद्यक, तत्त्वज्ञान, स्टँप एक्ट, व्याकरण, मौखिक परीक्षा आदि में प्रवीणता मिलती है। कर्क, वृश्चिक या मीन में हो तो टाइपिंग, अंगूठों के निशानों का अभ्यास, मैक्रालजी, शब्दशास्त्र, इन विषयों में कुशलता प्राप्त होती है। अभ्यास अच्छा होने के लिए पंचम में बुध की स्थिति अच्छी होनी चाहिए।

छठवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर–अशत्रुः। इसे शत्रु नही होते।

कल्याणवर्मा–वादविवादे कलहे नित्यजितो व्याधितः षष्ठे बुधे। अलसो विनष्टकोपो निष्ठुरवाक्योऽति परिभूतः ॥ यह हमेशा वादविवाद और झगडे में पराजित होता है। रोगी, आलसी और क्रोधरहित होता है। यह कठोर बोलता है और सदा अपमानित होता है।

वैद्यनाथ–विद्याविनोदकलहप्रियकृद् विशीलो बन्धूपकाररहितः शशिजेऽरियाते। यह विद्वान, विनोदी, झगडालू, शीलहीन और आप्तों पर उपकार न करनेवाला होता है।

पराशर–बुधःषष्ठेऽरिवृद्धिंच। व्रेन नाभिषु। शत्रु बढते हैं। नाभि के पास व्रण होता है।

वसिष्ठ–स्थानलाभम्। इन्दुजौ मतिविहीनमनःपरोगम्। जमीन मिलती है। बुद्धि हीन होती। बहुत रोग होते है।

गर्ग–नरपालस्य शत्रुः। नीचारिभवने संन्यासम्। रिपून् विजयते सौम्यः। नीचश्चास्तवक्रश्च षष्ठर्क्षे रिपुरिष्टकृत्। कन्यापत्योऽथ मातुलः। यह राजा का विरोधी होता है। यह बुध नीच अथवा शत्रु ग्रह की राशि में हो तो संन्यासी होता हैं। शत्रुओं पर विजय मिलता है। यह अस्तंगत, वक्री या नीच राशि में हो तो शत्रुओं से कष्ट होता है। मामा को सिर्फ कन्याएं ही होती हैं।

बृहद्यवनजातक–सन्तप्तचित्तः। सप्तत्रिके सौम्यः शत्रुभयम्। इस का चित्त सदा सन्तप्त होता है। ३७ वें वर्ष शत्रुओं का भय निर्माण होता है।

काशीनाथ—षष्ठे बुधे नृशंसश्च विरोधी सर्वबन्धुषु। ईर्ष्याधीनः कामपरो विद्वानपि भवेन्नरः॥ क्रूर, आप्तों का विरोध करनेवाला, ईर्ष्यालु, कामुक किन्तु विद्वान होता है।

आर्यग्रन्थकार—यह वक्री हो तो शत्रुओं की वृद्धि होती है। मार्गी हो अथवा इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या शुभ ग्रह साथ हो तो शत्रुओं का नाश होता है।

जयदेव—वादवित् गुणशाली। वादविवाद में कुशल तथा गुणवान होता है।

नारायणभट्ट विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां प्रबोधो यतीनां च रोधोऽनिलानाम्। बुधे सद्व्यये व्यवहारो निधीनां बलाद्र्थकृत् संभवेच्छत्रुभावे॥ यह लोगों से विरोध करता है। शत्रुओं को जीतता है,

संन्यासियों को ज्ञान देता है, प्राणायाम करता है, अच्छे कामों में धन खर्च करता है और अपने सामर्थ्य से धन प्राप्त करता है।

जीवनाथ—वायूनां प्रभवति विकारोऽपि जठरे। वराणां रत्नानां व्यवहृतिरतीवार्थ जननी। पेट में वातरोग होते हैं, रत्नों के व्यापार में धन मिलता है। यह राजा का शत्रु होता है। यह बुध नीच अथवा शत्रुग्रह की राशि में हो तो संन्यास लेना पडता है। शत्रुओं को पराजित करता है। यह नीच, अस्तंगत या वक्री हो तो शत्रुओं से तकलीफ होती है।

मन्त्रेश्वर—जागेश्वर के समान मत है।

घोलप—मूर्खों की सेवा करनेवाला, जड शरीर का, अपस्मार रोग से दुःखित, दुराचारी, पापी, दुखी, निर्धन, अन्यायी और शोकग्रस्त होता है। इसे बुरे लोगों से और चोरों से वहुत तकलीफ होती है।

पुंजराज—शत्रुस्थो ज्ञः पुंसां नूनं स्वपमृत्युं। असमय में मृत्यु होता है या प्राणान्तिक संकट आता है।

गोपालरत्नाकर—मां का मृत्यु होता है। बुद्धि दुष्ट होती है।

हिल्लाजातक—शस्त्रसकाशान्मृतिमरिगेज्ञे द्वित्रिवत्सरे। दूसरे या तीसरे वर्ष (२३ वर्ष यह अर्थ भी हो सकता है) शस्त्र से मृत्यु होता है।

यवनमत—संसार से उकताया हुआ, दुष्ट स्वभाव का और झगडा बढाने में कुशल होता है।

पाश्चात्यमत—इसे बदमाश नौकरों से तकलीफ होती है। क्षय या श्वास के रोग होते हैं। छाती दुर्बल होती है। मानसिक दुःख

से पीडा होती हैं। मन पर आघात होने से मृत्यु होता है। नौकर से फायदा होता है। स्वतंत्र व्यापार में लाभ नही होता रसायन शास्त्रज्ञ या लेखक होता है। प्रिन्टिंग प्रेस से संबंध आता है। इस बुध के साथ मंगल का अशुभ योग हो तो पागल होने की संभावना होती हैं। आत्महत्या कर सकता हैं।

अज्ञात—राजपूज्य: विद्याविघ्नं। दांभिक:। त्रिशद्वर्षे बहुराजस्नेहो भवति। बहुश्रुत: लेखक:। कुजर्क्षे नीलकुष्ठादिरोगी। शनिराहुकेतुयुते वातशूलादिरोगी। ज्ञातिशत्रुकलह:। भावाधिपे बलयुते ज्ञातिप्रबल:। अरिनीचर्क्षे ज्ञातिक्षय:॥ यह राजमान्य, दांभिक, बहुश्रुत लेखक होता है। शिक्षा में विघ्न आता है। ३० वें वर्ष राजा से अच्छी मित्रता होती है। यह बुध मंगल की राशि में हो तो काला कोढ आदि रोग होते हैं। इसके साथ शनि, राहु या केतु हो तो वातशूल आदि रोग होते हैं। अपनी जाति के लोगों से झगडे होते हैं, षष्ठ स्थान का स्वामी बलवान हो तो जाति अच्छी होती है। नीच अथवा शत्रु ग्रह की राशि में हो तो जाति की हानि होती है।

मेरे विचार—इस स्थान के शुभ फल पुरुष राशियों के और अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं। मामा को सिर्फ कन्याएं होना यह फल विचारणीय है। कई कुण्डलियों में पुत्र होने का फल भी हमने देखा है। बोल्ट ने अपस्मार होने का फल कहा वह बुध के अनुरूपही है। गोपाल रत्नाकर ने माता की मृत्यु का फल कैसे कहा यह स्पष्ट नही होता। छठवां स्थान माता का मारक स्थान नही है और बुध भी मृत्युकारक ग्रह नही है। अत: यह फल गलत प्रतीत होता है। षष्ठ में बुध और सप्तम में रवि होने पर माता की मृत्यु का फल देखने से ऐसा कहा होगा। ढिल्लाजातक में दूसरे या तीसरे वर्ष

शस्त्र से मृत्यु का फल कहा है। बचपन में घरमें खेलते वक्त चाकू, कैंची, छुरी आदि लग कर जखम होने का संभव होता है। किन्तु हमारे विचार से यहां २३ वें या ३२ वें वर्ष लडाई आदि में शस्त्रों के आघात से मृत्यु होने का फल अधिक ठीक होगा। ३० वें वर्ष राजाओं का मित्र होना यह फल अज्ञात ने कहा है किन्तु अकेले षष्ठ के बुध का यह फल बतलाना उचित नही होगा।

मेरे अनुभव—मेरे देखने में षष्ठ के बुध की कुण्डलियां कम आई हैं। स्त्री राशि में यह बुध हो तो लेखकों को दिमाग की तकलीफ होती है। लिखते या बोलते समय अवधान न रहने से कमज्यादा लिखने में या बोलने में आ जाता हैं। इसका लेखन लोकप्रिय होता, है और उसपर खूब चर्चा होती है। मध्यम आयु तक इसका आहार अच्छा होता है। फिर अपचन और बद्धकोष्ठ का विकार होता है। खाने में रुचि नही रहती। महत्त्वपूर्ण कार्य में एकदम अपयश मिलता है।

सातवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—धर्मज्ञः। धर्म जानता हैं।

कल्याणवर्मा – प्राज्ञां सुचारुवेषां नातिकुलीनां च कलहशीलां च। भार्यामनेकवित्तं बूते लभते महत्त्वं च॥ इसकी पत्नी बुद्धिमान अच्छा पोशाक करनेवाली, साधारण खानदान की, झगडालू होती है। यह नाना मार्गों से धन प्राप्त करता है और ऊंचे पद पर पहुंचता है।

वैद्यनाथ—व्यंगः शिल्पकला विनोदचतुरस्तारासुतेऽस्तंगते। यह बुध अस्तंगत हो तो शरीर में कुछ न्यूनता रहती है। यह शिल्पकला में कुशल और विनोदी होता है।

वसिष्ठ—बुधो बहुपुत्रयुक्तां रूपान्वितां जनमनोहररूपशीलां। पीडाम्। इसकी पत्नी सुन्दर और शीलवती होती है। उसे बहुत पुत्र होते हैं। शारीरिक पीडा होती है।

पराशर—युद्धे सति पराजयम्। लडाई में और वादविवाद मे पराजय होता है। वेश्यागमन करता है।

गर्ग—तुरगभावगते हरिणांकजे भवति चंचलमध्यनिरीक्षितः विपुलवंशभव-प्रमदापतिः स च भवेत् शुभगे शशिवंशजे॥ इसकी दृष्टि चंचल होती है। इसकी पत्नी के पिता को बहुत सन्तति होती है।

आर्यग्रन्थकार—गर्ग के समान मत हैं।

बृहद्यवनजातक-चारुशीलविभवैरलंकृता सत्यवाक्सु निरतो नरो भवेत्। कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनीन्दुजे॥ यह शीलवान, धनवान, सच बोलने वाला, स्त्रीपुत्रों से युक्त होता है। शशिजः कलत्रे स्त्र्याप्ति। सातवें वर्ष स्त्री प्राप्त होती है।

काशीनाथ—सप्तमस्थे सोमपुत्रे रूपविद्याधिको नरः। सुशीलः कामशास्त्रज्ञे नारीमानश्च जायते॥ यह रूपवान, विद्यावान, शीलवान, कामशास्त्रज्ञ तथा स्त्रियों को प्रिय होता हैं।

मन्त्रेश्वर—प्राज्ञोऽस्ते चारुवेषः ससकलमहिमा याति भार्यां सवित्तां। यह बुद्धिमान, ऊंचा पद प्राप्त करनेवाला, अच्छी पोशाक करनेवाला तथा धनवान स्त्री से व्याह करनेवाला होता है।

नारायणभट्ट—सुतः शीतगोः सप्तमेशं युवत्या विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे। अनस्तंगते हेमवत् देहशोभा न शक्नोति तत्संपदो वानुकर्तुम्॥ यह बुध अस्तगत न हो तो पत्नी का सुख मिलता है

किन्तु वीर्य अल्प मिलता है। शरीर सुवर्ण के समान सुन्दर होता है और संपत्ति भी अतुल होती है।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

जयदेव-धर्मवित्सुवचनः शुभशीलः कामिनीकनकसौख्ययुतोऽस्ते। धर्म को जाननेवाला, अच्छा बोलनेवाला, शीलवान, धनवान तथा स्त्री सुख से युक्त होता है।

पुंजराज—ईषच्छ्यामा नीलवर्णा बुधे बाला। पत्नी अल्पवय की और सांवले-नीले रंग की होती है।

जागेश्वर—भवेत्कामिनीनां सुखं सुंदरः स्यात् अनंगोत्सवे कामिनीनां कुवीर्यः। क्रये विक्रये लाभतो लुब्धचित्तो यदा चांद्रिचंद्राननागेहगामी॥ स्त्रीसुख मिलता है किन्तु वीर्य बलवान नही होता। खरीदविक्री के व्यवहार में लाभ होता है। सुंदर होता है।

बोलप—लेखन में कुशल, भाग्यवान, गोरे रंग का, अपने पराक्रम से धनार्जन करनेवाला, विद्वानों में सन्माननीय, राजनीतिक नेता, अच्छी वस्तुओं का संग्रह करनेवाला, धार्मिक, धनवान और अपने काम में कुशल होता है। इसे स्त्री और पुत्रो का सुख कम मिलता है।

हिल्लाजातक - तथा सप्तदशे वर्षे स्त्री सौख्यं कुरुते बुधः। १७ वें वर्ष स्त्री सुख मिलता है।

यवनमत—धनवान, सच बोलनेवाला, मांत्रिक, चतुर, परोपकारी, सुंदर, पंडित, बुद्धिमान और शीलवान होता है।

गोपाल रत्नाकर—इसे माता का सुख अच्छा मिलता है। शरीर सुदृढ होता है। स्त्री और धन प्राप्त होता है। इस के पास अच्छे घोड़े होते है।

पाश्चात्यमत -- इस के विवाह के समय झगडे होते हैं। यह साथीदार पर विश्वास नही करता। प्रवास में लाभ होता है। लेखन से कुछ समय बडे संकट में आते हैं। इस बुध पर अशुभ दृष्टि हो तो बहुत तकलीफ होती है।

अज्ञात—उदारमतिः। दिगन्तविश्रुतकीर्तिः। तत्र शुभयुते चतुर्विंशतिवर्षे आन्दोलिकाप्राप्तिः। कलत्रमतिः। अभक्ष्यभक्षकः। भावेशे बलयुते एकदारवान्। दारेशे दुर्बले पापे पापर्क्षे कुजादियुते बहुभार्यांतरः॥ यह उदार और कीर्तिमान होता है। इस के साथ शुभग्रह हो तो २४ वें वर्ष पालकी में बैठनेका सन्मान मिलता है। यह पत्नी के कहे अनुसार चलता है। अभक्ष्य खाता है। सप्तमेश बलवान हो तो एकही पत्नी होती है। सप्तमेश दुर्बल हो, पापग्रह की राशि में हो या मंगल आदि के साथ हो तो बहुभार्या योग होता है।

मेरे विचार--आचार्य और गुणाकरने धर्मज्ञ यह फल कहा है किन्तु धर्म का विचार नवम स्थान से करना चाहिए। वैद्यनाथने शरीर में व्यंग होने का फल कहा। किन्तु सप्तम में पापग्रह होने पर भी यह फल नही मिलता। बुध के अस्तंगत होने से यह फल कैसे मिलेगा यह स्पष्ट नही। बृहद्यवनजातक में ७ वें वर्ष और हिल्लाजातक में १७ वें वर्ष स्त्री प्राप्ति का फल कहा है। यह पुराने जमाने के अनुरूप है जब बालविवाह की रूढि थी। इस समय इन फलों का अनुभव नही आ सकता। इसी प्रकार २४ वें वर्ष पालकी का सन्मान मिलने के बारे में समझना चाहिए। पहले श्रीमान या विद्वान लोग पालकी में घूमते थे। अब यह प्रथा बंद हो गई है। कल्याणवर्माने स्त्री का कुल अच्छा नही होता ऐसा फल कहा है। इससे प्रतीत होता है कि उस समय भी मिश्र विवाह होते थे। नारायणभट्ट और जयदेवने वीर्य

अल्प होना यह फल कहा है। वीर्य अल्प होने पर स्त्रियों को प्रिय होना कैसे संभव है यह स्पष्ट नहीं होता। गर्गने विपुलवंशभव प्रमदापति ऐसा वर्णन किया है। इस के दो अर्थ किए है। एक तो इस की स्त्री को बहुत सन्तति होती है और दूसरे इस की स्त्री के पिता को बहुत सन्तति होती है। इस स्थान में शास्त्रकारोंने ज़ो शुभ फल कहे है वे पुरुष राशियों के हैं और अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं।

मेरा अनुभव--इस स्थान में पुरुष राशि में हो तो पत्नी सुन्दर, अच्छी होती है। उसका चेहरा रुबाबदार और कुछ लम्बासा होता है। केश काले, लम्बे, घने, चमकीले किन्तु रूक्ष होते है। शरीर प्रमाणबद्ध और देखने में कुछ पुरुष जैसा होता है। स्वर भर्राया सा होता है। यह धैर्यवान, बुद्धिमान, पढीलिखी, वादविवाद करनेवाली, पति के बारे में कुछ अनादर बतलानेवाली और झगडालू होती है। यह बुध स्त्री रात्री राशि में हो तो पत्नी का चेहरा गोल होता है। केश लहरीले, लम्बे, रेशम जैसे कोमल होते है। बोलना तीखा किन्तु स्वर मृदु होता है। पति के बारे मे आदर रखनेवाली और उस पर प्रेम करनेवाली होती है। पति से अधिक पढी हो तो भी मर्यादा से रहती है। व्यवहारी, आकर्षक और संसारदक्ष होती है। यह बुध मिथुन, तुला या धनु में हो तो शिक्षक, प्राध्यापक, वकील, पुस्तकविक्रेता, प्रकाशक आदि के व्यवसाय होते हैं। वृषभ, कन्या या मकर में हो तो व्यापारी, क्लर्क, टाईपिस्ट आदि के व्यवसाय होते है। कर्क वृश्चिक या मीन में हो तो कम्पाउंडर, सरकारी आफिस में क्लर्क आदि के व्यवसाय होते हैं। मेष या कन्या राशि में हो तो विवाह के बाद भाग्योदय और स्थिरता प्राप्त होती है इसे प्रवास बहुत करना पडता है।

आठवां स्थान

आचार्य व गुणाकर-विश्रुतगुणख्यातः। गुणों के कारण प्रसिद्ध होता है।

कल्याणवर्मा-विख्यातनामसारश्चिरजीवी कुलधरो निधनसंस्थे। शशितनये भवति नरो नृपतिसमो दण्डनायको वाऽपि॥ कीर्तिमान, दीर्घायु, कुलवान, राजा के समान अथवा सेनापति के समान प्रभावी होता है।

वैद्यनाथ-विनीतिबाहुल्यगुणप्रसिद्धो धनी सुधारश्मिसुतेऽष्टमस्थे। नम्रता आदि गुणों से प्रसिद्ध और धनवान होता है।

वसिष्ट—सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्। शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिं सौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्॥ अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह हो उसका एकही फल होता है-वह दुष्ट बुद्धि का, बहुत रोगी, सुखहीन होता है। शस्त्रों से उस के शरीर को पीडा होती है। इस ग्रन्थकारने अर्थ (धनलाभ) यह और एक फल कहा है।

पराशर—मृतौ बन्धुविहीनत्वं बन्धनम्। बन्धु नही होते। कारावास सहना पडता है।

गर्ग—करोति मृत्युं निधनस्थितो बुधः सुखेन तीर्थे सुखदे निराविले। शूलध्रजंघोदररोगपीडा पापः पिधायांतकरो नराणाम्॥ इस का मृत्यु किसी अच्छे तीर्थस्थान में सुखपूर्वक होता है। यह बुध अशुभ हो तो शूल, जांघ या पेट के रोग होते है।

वृहद्यवन जातक—भूपप्रसादाप्तसमस्तसिद्धिर्नरो विरोधी सुतरां स्ववर्गे। सर्वप्रयत्नैः परतापहन्ता रन्ध्रे भवेच्चन्द्रसुतः प्रसूतौ।

राजा की कृपा से सारा वैभव मिलता है। यह अपने लोगों से विरोध करता है। दूसरों के कष्ट दूर करता है। मन्त्रब्दकेहि धन धान्यविनाशकारी। १४ वें वर्ष धनधान्य का नाश होता है।

नारायण भट्ट—शतजीविनो रन्ध्रगे राजपुत्रे भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते निधानं नृपाद् विक्रयाद् वा लभन्ते युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमन्तः। यह सौ वर्ष जीनेवाला, देशविदेश में प्रख्यात, राजाश्रय या व्यापार से धनवान होनेवाला होता है। इसे स्त्री-सुख अच्छा मिलता है।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

जयदेव—ख्यातिमान्नृपकृपः सविरोधोऽन्योपकारसहितो विदि रन्ध्रे। कीर्तिमान्, राजा का कृपापात्र, लोगों से विरोध करनेवाला किन्तु परोपकारी होता है।

काशीनाथ—बुधेऽष्टमे कृतघ्नश्च कुबुद्धिः पारदारिकः। कामातुरोऽसत्यवादी रोगयुक्तो भवेन्नरः॥ यह कृतघ्न, दुष्ट बुद्धिका, व्यभिचारी, कामुक, झूठ बोलनेवाला और रोगी होता है।

जागेश्वर—जयदेव के समान मत है।

आर्यग्रन्थकार—निधनवेश्मनि सत्ययुतः शुभो निधनदोऽतिथिमंडन एव च। यदि च पापयुते रिपुगेहगे मदनकाम्यजनेन पतत्यधः॥ सच बोलनेवाला, तथा अतिथियों का सत्कार करनेवाला होता है। इसका मृत्यु अच्छी स्थिति में होता है। यह बुध पापग्रह के साथ या शत्रुग्रह की राशि में हो तो अति कामुक होने से अधःपात होता है।

मन्त्रेश्वर—विख्याताख्यश्चिरायुः कुलभृदधिपतिर्ज्ञेऽष्टमे दण्डनेता। कीर्तिमान, दीर्घायु, कुलवान, अधिकारी या सेनापति होता है।

काश्यप (जातकोत्तम)— १ ज्वरात् २ कफविकारोत्थं ३ वात-रोगाद् ४ व्रणेन च। ५ महाभयात् ६ प्रियजनवियोगात् ७ वेदना-भयात् ॥ ८ नेत्ररोगात् ९ वायुरोगात् १० बंधनेन ११ उदरामयात्। १२ पादव्रणाद् बुधे मृत्युर्मृत्युभावे भवेत् क्रमात् ॥ अष्टम का बुध मेष में हो तो ज्वर से, वृषभ में हो तो कफविकार से, मिथुन में हो तो वातरोग से, कर्क मे हो तो व्रण से, सिंह में हो तो किसी बडे रोग से, कन्या में हो तो प्रिय व्यक्ति के वियोग से, तुला में अति वेदना से, वृश्चिक में आंख के रोग से धनु में वायुरोग से, मकर में बंधन से, कुंभ में पेट के रोग से तथा मीन में हो तो पांव मे जखम होने से मृत्यु होता है।

घोलप—यह प्रकाशमान, धनी, दीप्तिमान, शत्रुहीन, पराक्रमी, शुद्ध चित्त का, श्रेष्ठ पण्डित, कवि, शुभ आचरण से जगत में पूज्य होनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—दीर्घायु, कीर्तिमान होता है। इसे जमीन का लाभ होता है। पुत्र कम होते हैं।

हिल्लाजातक—बृहद्यवनजातक के समान मत है।

यवनमत—दीर्घायु, रूपवान, अभिमानी, राजा के समान रहने वाला, झगडे लगाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला होता है।

पाश्चात्य मत—मस्तिष्क और नसाओं के रोग होते हैं। स्मरणशक्ति अच्छी होती है। मृत्यु के समय सावधान अवस्था में होता है। गुप्त विद्या और अध्यात्मशास्त्र का ज्ञान अच्छा होता है। साझी-दारी मे नुकसान होता है। यह बुध उच्च या शुभयोग में हो तो अकस्मात लाभ होता है।

अज्ञान—लाभः आयुः कारकः। सौख्यवान् वहुक्षेत्रवान्। सप्तपुत्रवान्। प्रमादः। पचविंशति वर्षे अनेक प्रतिष्ठासिद्धिः। नपराजकृपा रिपुक्षयः। कीर्तिप्रसिद्धः। भावाधिपे वलयुत पूर्णायुः। अरिनीचपापयुते अल्पायुः। उच्चे स्वक्षेत्रे वा शुभयुते पूर्णायुः॥ यह बुध लाभकारक होता है। सुख और बहुत जमीन प्राप्त होती है। सात पुत्र होते है। २५ वें वर्ष नाना प्रकारों से ऊंचा पद मिलता है। राजा की कृपा होती है। शत्रुओं का नाश होता है। कीर्ति मिलती है। अष्टमेश बलवान हो तो दीर्घायु होता है। यह बुध उच्च, शुभ ग्रहो से युक्त या स्वगृह में हो तो दीर्घायु होता है। यह शत्रु ग्रह की राशि में, नीच या पापग्रह के साथ हो तो अल्पायु होता है।

मेरे विचार—यवन जातक और हिल्लाजातक में १४ वें वर्ष संपत्ति नष्ट होने का फल कहा हैं। इस आयु में खुदकी संपत्ति नही होती। अतः इस की पैतृक संपत्ति का नाश होता है ऐसा फल समझना चाहिए। गोपाल रत्नाकरने अल्पसन्तति यह फल कहा तो अज्ञात के अनुसार इस सात पुत्र होते हैं। इन में पहला फल स्त्री राशियों में और दूसरा पुरुष राशियों में मिलता हैं। शुभ फल पुरुष राशियो के और अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं।

मेरा अनुभव—बुध मृत्युकारक ग्रह नही है। अतः यह अशुभ हो तो भी भयंकर शारीरिक आपत्ति इतनाही फल मिलेगा। अतःकाश्यप ने जो बारह प्रकारका मृत्युका वर्गीकरण दिया है वह निरर्थक प्रतीत होता है। मस्तिष्क के विकार होना यह फल पाश्चात्य मत में दिया है वह ठीक है। इस की प्रवृत्ति शास्त्रीय ज्ञान की और होती है। ज्योतिषी हो सकता है। इस की पत्नी

अच्छी होती है। वह बहुत बोलती है। पति के साथ आनन्दपूर्वक रहती है। घरके रहस्य बाहेर के लोक नही जानपाते। यह कुछ खर्चीली होती है। ये फल पुरुष राशियों के है। स्त्री राशियों में पत्नी अच्छी नही होती। घर के रहस्य सब लोंगो को मालूम हो जाते है। पत्नी झगडालू होती है। इस का शास्त्रीय ज्ञान अधूरा होता है। मस्तिष्क के विकारों से मृत्यु होता हैं। कुछ शास्त्रकारों ने राजकृपा, कीर्ति, सुख आदि फल दिए है वे अकेले बुध के नही है। बुध अष्टम में हो तो रवि सप्तम अष्टम या नवम में होता है अतः उस के फलों का भी इन में मिश्रण हुआ है।

नवम स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—धर्मे सुतार्थ सुखभाक्। सन्तति, संपत्ति तथा सुख मिलता है।

कल्याणवर्मा - नवमगते भवति पुमानतिधनविद्यायुतः शुभाचारः। वागीश्वरोऽतिनिपुणों धर्मिष्ठो सोमपुत्रे हि॥ बहुत धनवान, विद्वान, सदाचारी, वक्ता, निपुण और धर्मनिष्ठ होता है।

वसिष्ठ—बुधो धर्मक्रियासु निरतं कुरुते। रुजं। धार्मिक कार्यों में रुचि रखता है॥ रोगपीडित होता है।

गर्ग—मन्दभाग्यो बुधे पापे नरो बुद्धिमदानुगः। भाग्यवान् धार्मिको वापि शुभे सौम्ये तु धर्मगे॥ यह बुध अशुभ हो तो भाग्य कम होता है और अपनी बुद्धि का गर्व होता है। यह शुभ हो तो भाग्यवान और धार्मिक होता है।

वैद्यनाथ—सौम्ये धर्मगते तु धर्मधनिकः शास्त्री शुभाचारवान्। धार्मिक, धनी, शास्त्रों का ज्ञाता और सदाचारी होता है।

बृहद्यवनजातक—बुध उत्कृतिधाता चाऽठ जातादरोयोऽनुच-धनसुपुत्रैर्हर्षयुक्तो विशेषात् । विकृतियुतमनस्को धर्मपुण्यैकनिष्ठो ह्यमृत-किरणजन्मा पुण्यभामे यदा स्यात् ॥ परोपकारी, ज्ञानी, सुन्दर, सेवकों से युक्त, धनवान, अच्छे पुत्रों से युक्त, आनंदी, धर्मनिष्ठ, सदा पुण्यकार्य करनेवाला होता है। कभी कभी इस के मन में कुछ विकृति उत्पन्न होती है। गोक्ष्यब्दे मातृमृतिमिन्दुसुतः । दंताश्च सौम्ये स्मृतः । २९ वें वर्ष माता की मृत्यु होती है। ३२ वें वर्ष भाग्योदय होता है।

जयदेव—बृहद्यवनजातक के समान मत है।

नारायणभट्ट—बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान् । भवेद् दीक्षितः स्वर्धुनीस्नानको वा । कुलोद्योतकृद् भानुवद् भूमिपालात् प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम् ॥ धर्मनिष्ठ, बुद्धिमान, दीक्षा लेनेवाला, गंगा में स्नान करनेवाला कुल को उज्वल करनेवाला, राजा से भी अधिक प्रतापी तथा दुर्जनों का पराभव करनेवाला होता है।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

आर्यग्रन्थकार—नवमसौम्यगृहे शशिनन्दने धनकलत्रयुतेन समन्वितः भवति पापयुते विषयस्थितः श्रुतिविमन्दकरः शशिजोद्यमी ॥ स्त्री तथा धन से संपन्न होता है। यह पापग्रहों के साथ हो तो कुमार्ग की ओर जानेवाला, वेदों के प्रतिकूल तथा उद्यमी होता है।

काशीनाथ—धर्मे बुधे धार्मिकश्च कूपारामादिकारकः । सत्य-वादी च दान्तश्च जायते पितृवत्सलः ॥ धार्मिक, कुंए, बगीचे आदि बनानेवाला, सच बोलनेवाला, जितेन्द्रिय और पिता पर श्रद्धा रखने-वाला होता है।

जागेश्वर—भवेद्धर्मशीलो धिया योगलीलः श्रुतस्मार्तकं कर्म कर्ता धनाढ्यः । भवेत्तीर्थकृत् सुष्ठु वक्ता यदा स्यात् बुधः पुण्यभावे

नराणां विशेषात् ॥ धार्मिक, बुद्धिमान, योगाभ्यास करनेवाला, वेद और स्मृतियों में कहे हुए कार्य करनेवाला, धनवान, वक्ता और तीर्थयात्रा करनेवाला होता है।

मन्त्रेश्वर—विद्यार्थाचारधर्मैः सह तपसि बुधे स्यात् प्रवीणोऽति-वाग्मी ॥ विद्यावान, धनवान, धर्माचार का पालन करनेवाला, प्रवीण तथा अच्छा वक्ता होता है।

घोलप—धनलाभ विशेष होता है। स्त्री, पुत्र, घर आदि का सुख अच्छा मिलता है। शोभायुक्त, शूर, मित्रों से युक्त, श्रेष्ठ कवि, द्वेष रहित, सज्जनों से अपना हित करनेवाला, साधुपुरुषों की कृपा से पुत्रपौत्र और धन आदि प्राप्त करनेवाला, कांतिमान, दाता और प्रख्यात होता है।

गोपाल रत्नाकर—पुत्र बहुत होते हैं। संगीत प्रिय होता है। नृत्य, गीत वाद्य में रुचि होती है। दाक्षिण्य अच्छा होता है। व्यभि-चार करता है।

हिल्लाजातक—एकोनविंशतिं नवमो मातृरिष्टं करोति च। १९ वें वर्ष माता की मृत्यु होती है।

यवनमत—दानशील, शुद्ध, सत्त्वगुणी, धर्म प्रेमी, राजा के समान शुभ कार्य करनेवाला और धनवान होता है।

पाश्चात्य मत—चपल, बुद्धिमान, भाषाशास्त्र में प्रवीण, शोधक बुद्धि का, नई चीजों की रुचि रखनेवाला होता है। इस बुध पर अशुभ दृष्टि हो तो पागल के समान भटकना पडता है। शुभ योग में हो तो भाषाशास्त्र, कलाओं का ज्ञान या रसायनशास्त्र में प्रावीण्य मिलता है।

अज्ञात—बहुप्रजासिद्धः । वेदशास्त्रविशारदः । संगीतपाठकः । दाक्षिण्यवान् धार्मिकः प्रतापवान् बहुलाभवान् । पितृदीर्घायुः । पापयुते पापक्षेत्र पापवीक्षणात् पितृनाशः पितृक्लेशकरः । गुरुद्वेषी मन्दभाग्यः । बुद्धमतानुगः । भावाधिपे बलयुते पितृदीर्घायुः । तपोध्यानशीलवान् । भाग्यवान् । धार्मिकः ॥ सन्तति बहुत होती है । वेदशास्त्रों का पण्डित होता है । संगीत पढाता है । विनयी, धार्मिक, पराक्रमी, भाग्यवान होता है । यह बुध पापग्रहों के साथ, पापग्रहों की राशि में या दृष्टि में हो तो पिता को कष्ट होता है या मृत्यु होती है । वह गुरु का द्वेष करता है, भाग्य मंद होता है, बौद्ध मत का स्वीकार करता है । नवमेश बलवान हो तो पिता दीर्घायु होता है । तपस्वी, ध्यानी, शीलवान होता है ।

मेरे विचार—इस स्थान के शुभ फल पुरुष राशियों के और अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं । यवनजातक और हिल्लाजातक में माता के मृत्यु का फल कहा है। और अज्ञात ने पिता के मृत्यु का फल कहा है । इनमें पहला मत ही योग्य हो सकता है । नवमस्थान से शनि का भ्रमण होते समय माता की मृत्यु का योग होता है । यवन-जातक में ३२ वें वर्ष भाग्योदय का फल विशेष कहा है । इन सब फलों का वर्णन करते समय रवि के सम्बन्ध का विचार अवश्य करना चाहिए ।

मेरा अनुभव—इस स्थान में बुध, मिथुन, तुला या कुंभ राशि में हो तो, विवाह के बाद भाग्योदय होकर स्थिरता प्राप्त होती है । नौकरी या व्यवसाय में प्रगति होती है. भाईबहिनों से मदद मिलती है । वृत्तपत्रों के संपादक, प्रकाशक, लेखक, स्कूल के शिक्षक आदि

व्यवसायों में-जिनमें जीवनभर विद्याव्यासंग करना पडता है—ये लोग प्रगति करते हैं। यह बुध मेष, सिंह या धनु में हो तो गणितज्ञ, ज्योतिषी, शिक्षक, क्लर्क आदि का व्यवसाय करना पडता है। वृषभ, कन्या या मकर में हो तो व्यापार या व्यापारी के यहां नौकरी करनी पडती है। कर्क, वृश्चिक व मीन में हो तो टेलिफोन, पोस्ट ऑफिस या अन्य सरकारी आफिसों में क्लर्क आदि की नौकरी करते हैं। पदार्थविज्ञान में प्रवीण होते हैं।

दसवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर–सुखशौर्यभाक् खे। सुखी तथा शूर होता है।

कल्याणवर्मा–प्रवरमतिकर्मचेष्टः सकलारंभे विशारदो दशमे। धीरः सत्वसमेतो विविधालंकारसत्त्वभाक् सौम्ये। श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता के काम करनेवाला, कार्य का आरंभ करने में कुशल, धैर्यशाली, बलवान, विविध आभूषणों से युक्त और सुखी होता है।

वसिष्ठ–रूपान्वितत्वं बुधः। रूपवान और सुखी होता है।

गर्ग–धीमान् धीरो धर्मचेष्टो धर्मवृत्तियुतः सदा। सात्विकःकर्मगे सौम्ये नानालंकारवान्। श्रेष्ट बुद्धिवाला, धैर्यशाली, धार्मिक, सात्विक बुद्धिवाला, विविध आभूषणों से युक्त होता है।

वैद्यनाथ–व्यापारगे चंद्रसुते समस्तविद्यायशोवित्तविनोदशीलः। सर्व विद्यावान, कीर्तिमान, धनवान, व विनोदी होता है।

नारायणभट्ट–मितं संवदन् नो मितं संलभेत प्रसादादिवैकारि सौराजवृत्तिः बुधे कर्मगे पूजनीयोविशेषात्। पितुः संपदो नीतिदंडाधि

कारांत् ॥ यह कम बोलता है किंतु इसे लाभ अच्छा होता है। राजकीय अधिकारी होता है। पिता की संपत्ति के कारण इसे अच्छा सन्मान मिलता है।

काशीनाथाचार्य—दशमस्थे बुधे जातो धनधान्ययशोन्वितः। बहुभाग्यश्च विजयी कान्तियुक्तश्च मानवः॥ धनधान्य और कीर्तिसे युक्त, भाग्यवान, विजयी और कान्तिमान होता है।

बृहद्यवनजातक—ज्ञाताऽत्यन्तश्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासंपत्संयुतो राजमान्यः। चंचल्लीलावाग्विलासाधिशाली मानस्थाने बोधने वर्तमाने॥ ज्ञानी, श्रेष्ठ कार्य करनेवाला, विविध वैभव से संपन्न, राजमान्य, चंचल लीला करनेवाला, बोलने में कुशल होता है। विदेही: गोकुशरद्धनं च। १९ वें वर्ष धनप्राप्ति होती है।

जागेश्वर—बुधे काव्यविद्या तथा शिल्पकैर्वा सदा वाहनैर्मातृसौख्यो नरः। काव्य करने में कुशल होता है। शिल्पकला से उपजीविका करता है। वाहनों का सुख तथा माता का सुख अच्छा मिलता है।

आर्यग्रन्थकार—गुरुजनेन हिते निरतो जनो बहुधनो दशमे शशिनन्दने। निजभुजार्जितवित्ततुरंगमो बहुधनैर्नियतोऽमितभाषणः॥ बडेबूढों का हित करनेवाला, धनवान, अपने परिश्रमसे धन प्राप्त करनेवाला, घोडे रखनेवाला और बहुत बोलनेवाला होता है।

जयदेव—इसका मत अबतक के वर्णनों में आ गया है।

पुंजराज—सौम्ये काव्यकलापविधिना शिल्पेन लिप्या वणिक्लोकैः क्लीबजनैर्धनैर्धनचयं यत्साहसैरुद्यमैः॥ कविता करने से, शिल्पकला से, लेखन से, व्यापार से, क्लीबों के साहाय्य से और साहस से धनप्राप्ति होती है।

घोलप—मित्र, माता, राजा, धन और कुटुंब का सुख मिलता है। वेदों का अध्ययन करता है। धर्म और नीति का अनुसरण करता है। पुण्य कार्य करनेवाला, ज्ञानी, पूज्य, कवि, राजमान्य और सत्संग करनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—मंगल, प्रिय और शुभ कार्य करता है। किसी भी कार्य को सिद्ध करता है। व्यवहार में अति आसक्त होता है, आंखों के रोग होते हैं।

हिल्लाजातक--दिगीशस्थ: सप्तदशे। १७ वें वर्ष धनलाभ होता है।

यवनमत--कीर्तिमान, धनवान, राजा के समान वैभव से संपन्न होता है।

पाश्चात्य मत--यह भाषा तथा व्यापार में यशस्वी होता है। स्मरणशक्ति अच्छी होती है। प्रसंग के अनुकूल बोलने का कौशल्य होता है। गणित और भाषाशास्त्र में प्रवीण होता है। दलाली, लेखन और साहूकारी में अच्छा यश मिलता है। ये शुभ फल तभी मिलते हैं जब यह बुध स्वगृह में उच्च का होता है।

अज्ञात—अष्टाविंशतिवर्षे नेत्ररोगवान्। अरिमूढपापयुते कर्मविघ्नवान्। दुष्कृति: अनाचारः। २८ वें वर्ष आंख के रोग होते हैं। शत्रु ग्रह की राशि में या पापग्रह के साथ हो तो कार्य में विघ्न होता है। अशुभ कर्म करता है। दुराचारी होता है।

मेरे विचार—प्राय: सभी शास्त्रकारोंने इस स्थान में बुध के फल बहुत अच्छे कहे हैं। यवनजातक में १९ वें वर्ष और हिल्ला-जातक में १७ वें वर्ष धनलाभ का फल कहा है। इस वय में अपने

परिश्रमसे धनलाभ होना मुश्किल है, किन्तु वारस की हैसियत से या अकस्मात् लाभ होने से धन मिल सकता है। जागेश्वर ने उत्तम मातृसौख्य का फल कहा, वह ध्यानमें रखने योग्य है। अज्ञात ने २८ वें वर्ष नेत्ररोग का फल कहा है। अति वाचन या अध्ययन से ऐसा हो सकता है। २८ वें वर्ष से मंगल विशेष प्रभावी होता है, अतः सिर में उष्णता अधिक होने से भी नेत्ररोग हो सकते हैं। किंतु दशमस्थान का और आंखों का संबंध क्या हो सकता है। शास्त्रकारोंने जो शुभ फल दिये हैं वह पुरुष राशि के हैं और जो अशुभ फल हैं वह स्त्री राशि के हैं।

मेरा अनुभव-इस स्थान में अकेला बुध है ऐसी कल्पना कर, फल कहता हूँ। मेष, सिंह, धनु इनमें गणितज्ञ टंकलेखक, अध्यापक, एंजिनियर विभाग में क्लर्कस् ये व्यवसाय होते हैं। मिथुन तूल, कुंभ-सर्वे-डिपार्टमेंट P.W.D. पोस्टल डिपार्टमेन्टमें क्लर्कस्। वृषभ, कन्या, मकर-भाषाशास्त्रज्ञ, व्यापारी, Commission Agents, Travelling Agents. कर्क, वृश्चिक, मीन-समाचारपत्रके संचालक, संपादक, मुद्रक, प्रकाशक, स्टेशनरी दुकान, कोर्ट फी स्टँपव्हेन्डर्स आदि होते हैं। पिता भी कहीं क्लर्क रहते हैं। वे सुखसे पेन्शन का उपभोग लेते रहते हैं। यदि बुध यहाँ प्रबल होगा तो मातृसौख्य प्रचुर मात्रा में मिलता हैं।

ग्यारहवाँ स्थान

आचार्य व गुणाकर–लाभे प्रभूतधनवान्–अति संपत्ति प्राप्त होती है। **कल्याणवर्मा**–धनवान् विनेयभृत्यः प्राज्ञः सौख्यान्वितः। एकादशे बुधे स्थाने बव्हायुः ख्यातिमान् पुरुषः॥ धनवान, दासदासियोंसे युक्त, ज्ञानी, विविध सुखसे युक्त, दीर्घायु और प्रख्यात पुरुष होता है। **वशिष्ठ**–सौम्यो विवेकसुभगः। ज्ञानी और भाग्यवान्। सौख्यम्। सौख्यवान। **वैद्यनाथ**–सौम्ये लाभगृहगते निपुणधीर्विद्यायशस्वी धनी॥ **गर्ग**–स्त्रीवल्लभोतिगुणवान्, मतिमान्, स्वजन प्रियः। लाभगे सोमतनये मंदाग्निः समपद्यते॥ स्त्रियों को प्रिय, अतिगुणवान, बुद्धिमान, अपने लोगों को प्रिय होता है, भूख कम होती है।

बृहद्यवनजातक–भोगासक्तोऽत्यन्तवित्तो विनीतो नित्यानंदश्चारुशीलो बलिष्ठः। नानाविद्याभ्यासकृन्मानवः स्याल्लाभस्थाने नन्दने शीतभानोः। विविध तरह के भोगों में आसक्त, अति धनवान, नम्र, नित्य आनंद में रहनेवाला, सुशील, बलवान, विभिन्न प्रकारके विद्याओं का और विषयोंका जिज्ञासु होता है। ज्ञःपंचवेदे–धनम्–यह आयुके ४९ वें वर्ष में धनप्राप्ति कराता है।

नारायणभट्ट व जीवनाथ–विना लाभभावे स्थिते मेषजातं। न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति॥ कुतः कन्यकोद्वाहदानं च देयं कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति। जिसके लाभस्थान में बुध नहीं उसे द्रव्यलाभ, सौंदर्य और ऋणमुक्तता ये बातें सिद्ध नहीं हो सकती। उसके कन्या के विवाह में दहेज देनेके लिये संपत्ति कहाँसे प्राप्त होगी? उसके घर ब्राह्मण कैसे संतुष्ट हो सकेंगे? अर्थात् उपरोक्त स्थानमें यदि बुध होगा तो ये सभी बातें प्राप्त होगी।

आर्यग्रंथकार——श्रुतमतिर्निजवंशहितः कृशो बहुधनःप्रमदा जनवल्लभः। रुचिरनीलवपुर्गुणलोचनो भवति चायगते शशिजे नरः। उत्तम बुद्धिका, अपने वंशका हित कर्ता, शरीरसे कृश, अति धनवान, स्त्रियोंको प्रिय, काले वर्ण का और सुंदर आंखोंवाला होता है। जयदेवने सभी फलादेश अन्य शास्त्रकारों जैसे कहे हैं।

काशीनाथाचार्य-लाभे बुधे नित्यलाभो नीरोगश्च सदासुखी जनानुरागवृत्तिश्च कीर्तिमानपि जायते ॥ नित्य लाभ होते हैं। रोग रहित, सदाही सुखी, लोगोंसे प्रेमसे बर्ताव करनेवाला, कीर्तिमान होता है।

मंत्रेश्वर-बव्हायुः सत्यसन्धो-दीर्घायु और सत्यवादी।

जागेश्वर-अन्य शास्त्रकारों के समानही शुभ फल कहे हैं।

पुंजराज-शशिजे कन्याप्रजः स्यात् तथा। इसे लडकियां ही होती हैं। दशमस्थान में इस ग्रन्थकार ने जो व्यवसाय का फल दिया है वही इस स्थान में भी दिया है।

घोलप-राजा की कृपा से अपना इच्छित पूरा करनेवाला, शूर, तेजस्वी, सद्‌गुणी, पंडित, श्रेष्ठ, आमरण स्त्रीसुख प्राप्त करनेवाला और संगीतप्रिय होता है।

गोपालरत्नाकर-खेती बढानेवाला, व्यवहार में आसक्त, गणितज्ञ, आंखों के रोग होते हैं।

हिल्लाजातक-यवनजातक के समान मत हैं।

यवनमत-धनवान, अच्छे पुत्रों से युक्त, समझदार और राजा को प्रिय होता है।

पाश्चात्यमत-यह बुध बलवान हो तो सब तरह से लाभ होता है और निर्बल हो तो नुकसान होता है। राशियों के अनुसार इसके फल इस प्रकार हैं-मेष-झगडालू। वृषभ-दुराग्रही। मिथुन-चपल। कर्क-नीच लोगों का मित्र। सिंह-अच्छे लोगों का मित्र। कन्या-विद्वान और शीलवान। तुला-कलाकुशल लोगों का मित्र। वृश्चिक-झगडालू और ठग। धनु-दांभिक, अभिमानी। मकर-कपटी, अविश्वासी। कुंभ-विश्वासयोग्य मित्र। मीन-गप्पें हांकनेवाला, जिज्ञासु।

अज्ञात-बहुमंगलप्रदः। शिल्पलेखनव्यापारयोगे अनेकप्रकारेण धनवान्। एकोनविंशतिवर्षादुपरि क्षेत्रपुत्रधनवान् दयावान्। पापर्क्षे पापयुते हीनमूलेन धनलोपः। उच्चे स्वक्षेत्रे शुभयुते शुभमूलेन धनवान्। यह बुध कल्याणकारी होता है, शिल्पकला, लेखन या व्यापार में अनेक प्रकारों से धन मिलता है। १९ वें वर्ष के बाद जमीन, सन्तति और धन की प्राप्ति होती है। यह बुध पापग्रह की राशि में या पापग्रह के साथ हो तो बुरे मार्गों से धनका नाश होता है। यह उच्च, स्वगृह में या शुभ ग्रहों के साथ हो तो अच्छे मार्गों से धनवान होता है।

मेरे विचार-इस स्थान में सभी शास्त्रकारोंने बहुत शुभ फल कहे हैं। किन्तु बुध अन्य ग्रहों के शुभ योग में हो और उच्च का हो तो भी ये सभी फल नहीं मिलते ऐसा अनुभव है। क्योंकि इस बुध के समीप प्रायः रवि और शुक्र होते हैं उनके फलों का परिणाम भी देखना आवश्यक है। कुछ शास्त्रकारोंने प्रथम से एकादश तक सभी स्थानों में बुध का फल धनवान होना ऐसा कहा है वह भी ठीक प्रतीत नहीं होता। क्योंकि ऐसा हो तो जगत में धनवान

पुरुषों की ही संख्या अधिक हो जायेगी। अतः प्रत्येक ग्रह का फल बतलाते समय उसके कारकत्व का भी विचार करना चाहिए। सभी विषयोंका फल बुध से बतलाना योग्य नहीं है। उदाहरणार्थ—लाभ-स्थान में तुला राशि में बुध हो, दशममें रवि, नवम में शुक्र, तृतीय में वक्री शनि और धनस्थान में मंगल हो तो ऐसी कुण्डली में बुध के शुभ फल मिलना संभव नहीं है। अतः ग्रह के फल देने के सामर्थ्य का भी विचार करना चाहिए।

मेरा अनुभव—इस स्थान में बुध मेष, सिंह या धनु राशि में हो तो एक या दो पुत्र होते हैं। बडे भाई की स्थिति अच्छी नहीं रहती। लेखक या क्लर्क होता है। वृषभ, कन्या या मकर में हो तो-चित्रकार, शिल्पकार, टाइपिस्ट या कंपाउंडर आदि होता है। कर्क, वृश्चिक या मीन में हो तो स्वतंत्र व्यापार करता है। मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो शिक्षक, डेमान्स्ट्रेटर आदि होता है। इन लोगों को शेयर-व्यापार में अच्छा लाभ होता है।

बारहवाँ स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—पतितस्तु रिःफे। अपने धर्म-कर्म से भ्रष्ट होता है।

कल्याणवर्मा—सुगृहीतवाक्यमलसं परिभूतं वाग्मिनं तथा प्राज्ञं। व्ययगः करोति सौम्यः पुरुषं दीनं नृशंसं च॥ यह बुद्धिमान, बोलने में कुशल होता है। इसके वाक्य लोग आदर से सुनते हैं। यह दीन, क्रूर, आलसी और सदा अपमानित होता है।

वसिष्ठ–चन्द्रांगजो गतधनम् । अर्थक्षतिः । धनहानि होती है ।

गर्ग–नृपपीडनसन्तप्तं परवादेन पीडितं । नृशंसं पुरुषं चांद्रिः कुरुते व्ययराशिगः । राजा के क्रोध से इसे तकलीफ होती है, लोग निन्दा करते हैं, क्रूर होता है ।

बृहद्यवनजातक-दयाविहीनः स्वजनैर्विभक्तः सत्कार्यदक्षो विजितारिपक्षः। धूर्तो नितान्तं मलिनो नरः स्याद् व्ययोपपन्ने द्विजराज-सूनौ। निर्दय, अपने लोगों से दूर रहनेवाला, शत्रुओं पर जय पाने-वाला, अच्छे कार्य करनेवाला, धूर्त और मलिन होता है ।

नारायणभट्ट–न चेद् द्वादशे यस्य शीतांशुजात : कथं तद्गृहं भूमिदेवा भजंति । रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्माद् हिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुभूयात् ॥ यह सदा ब्राम्हणों को दान देता है। युद्ध में शत्रुओंको भयभीत करता है। इसकी सम्मत्ति अक्षुण्ण रहती है ।

आर्यग्रन्थकार–भवति च व्ययगे शशिनन्दने विकलमूर्तिधरो धनवर्जितः। परकलत्रधने धनचित्तवान् व्यसनदूररतः कृतकः सदा ॥ इस का शरीर विकल होता है । यह निर्धन और बहुत व्यसनी होता है । परस्त्री और परधन में आसक्त होता है ।

जयदेव–सत्संगकर्मापगतोऽदयश्च धूर्तः सपापो मलिनो व्ययस्थे। सत्संग और अच्छे कार्यों से दूर रहता है । निर्दय, धूर्त, पापी और मलिन होता है ।

काशीनाथ–बुधे व्यये व्ययी लोके रोगी बन्धुसमन्वित : । पापसक्तः पराधीनः परंपक्षी च जायते । खर्चीला, रोगी, पाप करने में आसक्त, दूसरों के आधीन, विरुद्ध पक्ष की ओर जलदी झुकनेवाला होता है ।

मन्त्रेश्वर–दीनो विद्याविहीनः परिभवसहितोऽन्त्ये नृशंसोऽलसश्च। दीन, विद्याहीन, अपमानित, क्रूर और आलसी होता है।

जीवनाथ–बड़े यज्ञ करनेवाला और तीर्थयात्रा करनेवाला होता है। अन्य फल नारायणभट्ट के समान हैं।

जागेश्वर–बुधे वारमुख्या धनं वै भजन्ति दया तस्य बुद्धौ कुतस्तातवर्गः। स्वकीये च वर्गे भवेद्दत्तहीनः परं शत्रुवर्गं जयेत्तत्र लीनो भवेद्धूर्तधामा यदा चान्द्रिरन्त्ये॥ वेश्याव्यसन में धन खर्च करता है। अपने लोगों पर कुछ उपकार नहीं करता। शत्रुओं पर जय पाता है। निर्दय, धूर्त किन्तु नम्रता बतलानेवाला होता है। इसके पिता आदि आप्त नहीं होते।

पुंजराज–ज्ञे व्ययभावसंस्थे पितुः सहोत्थाः सुखिनः तदा स्युः। बुधेन विपुला धरित्री। इसके पिता के भाई सुख से रहते हैं। जमीन बहुत मिलती है।

घोलप–दुर्बुद्धि, कर्कश, द्वेषी, अशक्त, पराक्रमहीन, प्रवासी होता है। बिच्छू, सांप और जानवरों से कष्ट होता है। कोढी या अंधा हो सकता है।

गोपाल रत्नाकर–ज्ञानी, कामुक, दूसरों के घर रहनेवाला। पुत्र कम होते हैं, माता की मृत्यु होती है। इसके साथ रवि हो तो विश्वासी स्वभाव होता है।

हिल्लाजातक–चतुश्चतुः द्वादशो हानिदः स्त्रियः। ४४ वें वर्ष स्त्री की मृत्यु होती है।

यवनजातक–व्ययचन्द्रजः द्वाविंशत्। २२ वें वर्ष धनहानि होती है।

यवनमत-नीच पुरुषों की संगति से नुकसान होता है। यह निर्दय, धनहीन और बेफिक्र होता है।

पाश्चात्यमत-यह स्पष्टवक्ता और विजयी होता है। मकर या वृश्चिक में हो तो इसे कपटी शत्रु बहुत होते हैं। साहसी कार्य करता है। शुभ सम्बन्ध में हो तो इसे अध्यात्मज्ञान, गूढशास्त्र और असाध्य सिद्धियोंकी प्राप्ति होती है। यह अधिकार योग भी होता है।

अज्ञान-ज्ञानवान् स्वतुंगगे वित्तवान्। विद्यावान् बहुव्ययः। नृपात् भयम्। पापयुते चंचलचित्तः नृपजनद्वेषी। विद्याहीनः। शुभयुते धर्ममूलेन धनव्ययः। उच्चे स्वक्षेत्रे लोकधुरीणः कार्यकर्ता च॥ यह ज्ञानी, विद्यावान होता है। उच्च का हो तो धनवान् होता है। बहुत खर्च करता है। राजा का भय होता है। पापग्रहों के साथ हो तो चित्त चंचल होता है। राजा और अधिकारी वर्ग से द्वेष करता है। विद्याहीन होता है। शुभ ग्रहों के साथ हो तो धर्मकार्य में धन ख़र्च करता है। स्वगृह में या उच्चका हो तो नेता और अच्छा कार्यकर्ता होता है।

मेरे विचार-शास्त्रकारों ने प्रायः जो शुभ फल दिए हैं वे पुरुष राशियों में मिलते हैं और अशुभ फलों का अनुभव स्त्रीराशियों में आता है। शास्त्रकारों का फलवर्णन प्रायः ठीक है।

मेरा अनुभव-इस स्थान में बुध पुरुष राशि में हो तो शिक्षा पूरी होती है। वृत्ति संतोषी होती है। दानधर्म करना चाहता है। ये लोग जो व्यवसाय करते हैं उसमें यशस्वी होते हैं। कीर्ति मिलती है। लोग इनसे खुद होकर प्रेम करते हैं। लोगों पर प्रभाव पड़ता है। बुद्धि सूक्ष्म होती

है और उसका दुरुपयोग नहीं करते। कभी किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में नीचों की सलाह मानने से इनका नुकसान होता है। राजनीति में कुशल होते हैं। यह बुध स्त्रीराशि में हो तो स्वभाव एकान्तप्रिय, लोगों के व्यवहारमें ध्यान न देनेवाला, आलसी, अपने ही घर में सन्तुष्ट रहनेवाला होता है। कष्ट सहन नहीं होते। शिक्षा पूरी नहीं होती। इन्टरमीजिएट या बी. ए. फेल होकर शिक्षा छोड़ देते हैं। ये लोग किसी की बात पर विश्वास नहीं रखते। संशयी प्रवृत्ति होती है। यह बुध चन्द्र के साथ प्रतियोग या युति करता हो (फिर वह स्त्रीराशि में हो या पुरुष राशि में) तो झूठा अभिमान होता है। दिखावेके लिए दानधर्म करते हैं, अपने को बहुत बड़ा समझते हैं। गप्पें हांकते हैं। ये निर्दय, दुष्ट, क्षमा और ममता से दूर होते हैं। ये लोग खाने के लिए जीते हैं; जीने के लिए खाने की प्रवृत्ति नहीं होती। खाना, पीना, मजा करना और दोचार लडकों को जन्म देकर एक दिन चल बसना यही इनका जीवनक्रम होता है।

प्रकरण ६

महादशा-विचार

महादशा का फल कैसे देखना चाहिए यह रवि विचार में स्पष्ट किया है उसी का यहां उपयोग करना चाहिए।

आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती जन्म नक्षत्र हो तो जन्म से १७ वें वर्ष तक बुध की महादशा होती है। इस समय खुद को विशेष लाभ नहीं होता किन्तु पिता की स्थिति में सुधार होता है। बुध यदि मेष, वृषभ, मिथुन, सिंह, तुला या धनुराशि में हो तो इस दशा में दांत जलदी निकलते हैं। बोलना भी जलदी शुरू होता है। खेलने की ओर ज्यादा प्रवृत्ति होती है। कन्या, मकर या कुंभ में बुध हो तो दांत देर से निकलते हैं और बोलना भी जलदी शुरू नहीं होता। कर्क, वृश्चिक या मीन में बुध हो तो बोलना जलदी शुरू नहीं होता, दांत भी जलदी नही आते। यह बुध शनि से दूषित न हो तो विद्याभ्यास का प्रारंभ अच्छा होता है। फेल होने का मौका नहीं आता। छोटे भाई होते हैं। मैट्रिक होकर कालेज में पढने को तैयारी होती है। मित्र बहुत होते हैं। बुध दूषित हो तो बालग्रह, सूखा, मिट्टी खाने से लिवर, स्प्लिन, कौळ आदि विकार होते हैं। कई बार फेल हो कर शिक्षा पूरी करता है।

पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र हो तो यह महादशा २० वें वर्ष से ३७ वें वर्ष तक होती है। इस दशा में शिक्षा पूरी होती है औरं ब्याह होता है, सन्तति होती है, नौकरी या व्यवसाय शुरू होता है। मां या पिता की मृत्यु होती है। कुण्डली में बुध दूषित हो तो

इस दशा में वेकार रहना पड़ता है। शिक्षा पूरी नहीं होती। चित्तभ्रम होता है। अयोग्य लेखन से अथवा झूठी गवाही देने से दण्ड भुगतना पड़ता है। व्याह नहीं होता। भटकना पड़ता है। सिरदर्द, पागलपन आदि मस्तिष्कविकार होते हैं।

पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र हो तो यह महादशा ३६ वें वर्ष से ४३ वें वर्ष तक होती है। इस दशा में सन्तति, संपत्ति, कीर्ति, मित्र, स्त्रीसुख आदि का लाभ होकर स्थिरता प्राप्त होती है।

आर्द्रा, स्वाति और शततारका नक्षत्र हो तो ४३ वें वर्ष से ६० वें वर्ष तक यह महादशा होती है। इस दशा में लडके सयाने होकर घर का कारोबार देखने लगते हैं। यह निवृत्ति का वय है। बुद्धि आखिर तक तेज रहती है। सभी इच्छाएं पूरी होकर समाधान से और सावधानी से मृत्यु होता है।

बुध किसी भी राशि में हो, यदि वह दूषित नहीं हो तो उसकी दशा में जीवन सरल रीति से व्यतीत होता है, कोई बडे उत्पात नहीं होते। किन्तु बुध मंगल से दूषित हो तो बहुत स्थित्यन्तर होते हैं। परिस्थिति में उतार चढाव बहुत होता है। वेकारी से मस्तिष्क को तकलीफ होती है। दूसरों के आश्रय से रहना पडता है। बहुत प्रतिकूल परिस्थिति के कारण आत्महत्या करने का विचार होता है व्ययस्थान दूषित हो तो आत्महत्या करते भी हैं।

बुध की महादशा में शनि, रवि, राहु, शुक्र, केतु की अन्तर्दशाएं अच्छी होती हैं। बुध, चन्द्र, मंगल और गुरु की अन्तर्दशाएं अशुभ होती हैं। बुध, लग्न, धन, पंचम सप्तम, नवम, दशम, लाभ या व्ययस्थान में हो तो उसकी दशा अच्छी होती है। अन्य स्थानों

में हो तो अशुभ होती हैं। राशियों के अनुसार साधारण फल ऐसे हैं–मेष–साधारण अच्छी। सिंह–उत्तम। धनु-अति उत्तम। तुला–अच्छी। कुंभ–साधारण अच्छी। वृषभ, कन्या तथा मकर–साधारण अशुभ। कर्क, वृश्चिक तथा मीन–बहुत अशुभ।

बुध की दशा के फल के बारे में शास्त्रकारों के विचार इस प्रकार हैं–**वैद्यनाथ**-पाकादौ त्रिफलं सर्वं शुभमन्ते प्रयच्छति। इस दशा के आरम्भ में कुछ अच्छा फल नहीं मिलता। अन्त में सब शुभ फल मिलता है। **पराशर**-दशादौ धनधान्यं च विद्यालाभो महत् सुखम्। पुत्रकल्याणसंपत्तिः सन्मार्गे धनलाभकृत्॥ मध्ये नरेन्द्रसन्मान मन्ते दुःख भविष्यति॥ इस दशा के प्रारम्भ में धनधान्य मिलता है, शिक्षा पूरी होती है, सन्तति होती है, अच्छे मार्ग से धन मिलता है। दशा के मध्य भाग में राजा द्वारा सन्मान होता है और अन्तिम काल में दुख होता है। इन दोनों मतों में बहुत विरोध है इसमें कौनसा मत ठीक है इसका अनुभव देखना चाहिए। मेरे विचार से यह दशा अच्छी या बुरी होना मंगल पर अवलंबित होता है। बुधमंगल में शुभयोग हो तो यह दशा बहुत अच्छी होती है। उनमें अशुभ योग हो तो यह दशा अशुभ होती है। अतः मंगल की स्थिति देखकर इस दशा का फल बतलाना चाहिए।

प्रकरण ७

समारोप

सामान्यत: बुध का अधिकार विद्यार्थी दशा पर होता है। यूनिवर्सिटी की उपाधि प्राप्त होने पर बुध का अधिकार भी समाप्त होता है। किन्तु जो लोग शिक्षा पूरी होने पर भी विद्याभ्यास के कार्य में ही लगे रहते हैं और डॉक्टरेट आदि प्राप्त करते हैं उनके पूरे जीवन पर ही बुध का अधिकार होता है। वकील, शिक्षक, क्लर्क आदि की उपजीविका भी ज्ञानपर ही आधारित है अत: उ‍ पर भी बुध का अधिकार होता है।

शास्त्रकारोंने बुध को नपुंसक माना है किन्तु इसका खंडन हम पहले कर ही चुके हैं।

एक और मत ऐसा है कि बुध जैसे ग्रहों के साथ हो और जैसी राशियों में हो वैसा उसके फल में फरक पडता है। पानी तेरा रंग कैसा-जिसमें मिलाया वैसा ऐसे बुध की स्थिति है। किन्तु हमारे विचार से बुध के स्वतंत्र फल भी मिलते हैं। यह अस्तंगत हो तो भी उसके फल व्यर्थ नही होते।

मानव जाति की सभ्यता और संस्कृति का ही यह ग्रह प्रतीक है अत: उस का महत्त्व बहुत है।

अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट ज्योतिष ग्रंथ

कै. ज्यो. ह. ने. काटवे

ग्रंथ	भाषा	आवृत्ति		रु. आ.
१ रवि-विचार	मराठी	दुसरी आवृत्ति		२-०
२ चंद्र-विचार	,,	,,	...	२-०
३ मंगळ-विचार	,,	,,	...	२-८
४ बुध-विचार	,,	,,	...	२-०
५ गुरु-विचार	,,	,,	...	२-८
६ शुक्र-विचार	,,	,,	...	२-८
७ शनि-विचार	,,	,,	...	२-८
८ भाव-विचार	,,	,,	...	२-०
९ गोचर-विचार	,,	,,	...	२-८
१० शुभाशुभ ग्रहनिर्णय-विचार		पहिली आवृत्ति	...	२-०
११ भावेश-विचार	,,	दुसरी आवृत्ति	...	२-८
१२ ग्रहण विचार	,,	,,	...	३-८
१३ योग-विचार भाग १ ला	,,	,,	...	१-०
१४ योग-विचार भाग २ रा	,,	पहिली आवृत्ति	...	२-८
१५ योग-विचार भाग ३ रा	,,	,,	...	२-०
१६ योग-विचार भाग ४ था	,,	,,	...	१-०
१७ योग-विचार भाग ५ वा	,,	,,	...	१-८
१८ योग-विचार भाग ६ वा	,,	,,	...	२-०
१९ योग-विचार भाग ७ वा	,,	,,	...	२-०
२० अध्यात्म ज्योतिष-विचार	हिन्दी	,,	...	१०-०
२१ रवि-विचार	,,	,,	...	१-८
२२ चन्द्र-विचार	,,	,,	...	२-०
२३ मंगल-विचार	,,	,,	...	२-८
२४ बुध-विचार	,,	,,	...	२-०

नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर नं. १